ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

अक्टूबर 2018

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

52वें वार्षिकोत्सव का परीचयांक

श्रीमती ज्योति झाम धर्मपत्नी श्री अम्बरीश जी झाम को स्मारिका एवम् घड़ी देकर सम्मानित करते हुए दाएं से श्री स्वामी धर्ममुनि जी मुख्य अधिष्ठाता आश्रम, श्री आचार्य चांद सिंह जी आर्य, श्री सत्यपाल जी वत्स आर्य, आश्रम ट्रस्टी, श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी, आश्रम फर्रूखनगर एवम् श्री नारायण सिंह जी महाउपदेशक पंजाब। इस अवसर पर श्रीमती ज्योति झाम धर्मपत्नी श्री अम्बरीश जी ने आश्रम को 1 लाख रूपये का सहयोग राशि प्रदान की। परिवार के लिए आश्रम की ओर से शुभकामनाएं।

श्रीमती वेदकौर शौकिन धर्मपत्नी श्री मा. स्वरूप सिंह शौकिन जी को स्मारिका एवम् घड़ी देकर सम्मानित करते हुए दाएं से श्रीमती रूक्मेश आर्या सांगवान,श्री स्वामी धर्ममुनि जी, अधिष्ठाता आश्रम, श्री सत्यपाल जी वत्स आर्य, ट्रस्टी आश्रम एवम् श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी, आश्रम फर्रूखनगर। इस अवसर पर श्रीमती वेदकौर शौकिन धर्मपत्नी श्री मा. स्वरूप सिंह शौकिन जी ने 51 हजार रूपये का सहयोग राशि प्रदान की। परिवार के लिए आश्रम की ओर से शुभकामनाएं।

आर्य समाज के संस्थापक, वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

राज सिंह दहिया- जीवन परिचय

श्री राज सिंह दहिया

श्री राज सिंह दहिया का जन्म 8 जुलाई 1954 में गांव नाहरी जिला सोनीपत में हुआ। इनके पिता जी स्वर्गीय चौ. राम सिंह दहिया माल विभाग में ख्याति प्राप्त कर पटवारी के स्थान पर नियुक्त थे और वे सामाजिक कार्यक्षेत्र में रूचि रखते थे। इनकी माता स्वर्गीय श्रीमती मामकोर देवी धार्मिक विचारधारा रखती थी। इनकी पत्नी श्रीमती कृष्णा देवी, सुशिक्षित, धार्मिक कार्यक्रमों में विशेष रूप से रूचि रखती हैं। इनका आत्मशुद्धि पथ के प्रचार-प्रसार में विशेष सहयोग प्राप्त है।

व्यवसाय-कृषि और ट्रांसपोर्ट में कार्यरत है एवं पिता जी के प्रसाद से आर्यसामाजिक कार्य में भी रूचि रखते हैं। गरीब बच्चों की सहायता के लिए सदा तत्पर, रहते हैं। उदारतापूर्वक आत्मशुद्धि आश्रम में समय-समय पर सहयोग, दान आदि देते रहते हैं।

संतान-बेटा अमेरिका से एम.बी.ए. की शिक्षा प्राप्त कर दुबई में वित्त प्रबन्धक के पद पर तैनात है। वह उदारता पूर्वक जरूरतमंद छात्र छात्राओं की शिक्षा में विशेष रूप से सहयोग देते हैं। बड़ी बेटी बी.ए., बी.एड. और सुशिक्षित एक आदर्श गृहिणी है। एवम् छोटी पुत्री एम.टैक की शिक्षा प्राप्त कर, प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त कर गृह मन्त्रालय (केन्द्र) में तैनात है।

- मा. हरिसिंह दहिया

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

1061
श्री मयंक जैन जी
मॉडल टाऊन, नाहारा नाहरी रोड़
बहादुरगढ़, हरियाणा

1062
श्रीमती सरोज भल्ला
धर्मपत्नी श्री अजय भल्ला जी
गुलमोहर पार्क दिल्ली

1065
श्री संदीप जी सरीन
शंकरा मशीन, टुल्स प्रा. लि.
बहादुरगढ़, हरियाणा

1063
श्री भगवान सिंह जी आर्य
मोहल्ला कानूगो,
झज्जर, हरियाणा

1064
श्री सुरेन्द्र जी गुप्ता आर्य
सैक्टर-4, रोहिणी, दिल्ली

प्रिय बन्धुओं! मास अक्टूबर में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी नवम्बर अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे। - व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

आश्विन-कार्तिक सम्वत् 2075 अक्टूबर 2018

सृष्टि सं. 1972949119 दयानन्दाब्द 194

वर्ष-17) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-10

(वर्ष 48 अंक 10)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी' (मो. 9416054195)

❖

सम्पादक:

श्री राजवीर आर्य (मो. 9811778655)

❖

सह सम्पादक:

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

❖

परामर्श दाता: गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री (मो. 08053403508)

❖

उपकार्यालय

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
15 वर्ष के लिए	: 1500 रुपये
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रूपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
आश्रम समाचार	4
सूर्य का आविर्भाव	9
नशों के मकड़जाल में फंसता हमारा समाज	10
ईश्वर के सन्निकट रहें	12
जियो भय मुक्त जीवन	14
मनुष्यता बनाम पशुता	16
52वें वार्षिकोत्सव की चित्रमय झलकियां	19
मानव जीवन में संस्कारों का महत्व	23
लहसुन बचाता है इन्फेक्शंस से और सेब बुढ़ापा से	25
महान बनो	26
हंसो और हंसाओ	27
कलंक की कहानी कहता मृत्युभोज	28
आर्य समाज की दृष्टि में योगेश्वर कृष्ण	30
विजयदशमी पर्व की सांस्कृतिक महत्व	34
दान सूची	36

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

आत्मशुद्धि आश्रम का 52वां स्थापना दिवस यज्ञ साधना वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

बुधवार दिनांक 26 सितम्बर से मंगलवार 2 अक्टूबर 2018 तक आश्रम का 52वां स्थापना दिवस यज्ञ साधना व उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें ध्यान योग शिविर ऋग्वेद से बृहद यज्ञ महिला सम्मेलन, चरित्र निर्माण सम्मेलन 52वां स्थापना दिवस समारोह एवं आश्रम संस्थापक पूज्य आत्म स्वामी जी का जन्मोत्सव पूजय स्वामी धर्ममुनि जी मुख्याधिष्ठाता आश्रम के तपोमय पवित्र सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर अनेकों आर्य संन्यासी विद्वान, विदुषियां दानवीर तथा आर्य समाज के मुख्य कार्यकर्त्ता तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक व भजोपदेशिकाओं ने सात दिवसीय कार्यक्रम में पधारकर श्रद्धालुओं को सद्प्रेरणा देकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। सभी ने आश्रम के द्वारा किये जा रहे कार्यों की सराहनीय प्रशंसा की।

ऋग्वेद वृहद यज्ञ- 26 सितम्बर से प्रतिदिन प्रातः 8 बजे से 11 बजे तक और सायं 3 बजे से 6

बजे तक ऋग्वेद बृहद यज्ञ का अनुष्ठान होता रहा। इसमें यज्ञ के ब्रह्मा वेदज्ञ आचार्य अखिलेश्वर जी (अध्यक्ष वैदिक योग आश्रम आनन्दधाम हरिद्वार) रहे। वेदपाठ श्री ध्रुव शास्त्री व ब्र. हेमराज द्वारा किया गया। यज्ञ वेदी पर यजमान आसनों को प्रतिदिन प्रातः सायं श्री कन्हैयालाल जी सहपत्नीक गुरुग्राम हरियाणा श्री डॉ. अशोक जी नागपाल सहपत्निक झज्जर, श्री विनोद कुमार जी, डरोलिया, बहादुरगढ़, श्री कर्नल राजेन्द्र जी सहरावत सैक्टर-6, बहादुरगढ़, श्री पुरुषार्थ मुनि जी, श्री रामदेव जी, श्री दुष्यन्त जी राजवंशी सहपत्निक, सैक्टर-6, बहादुरगढ़, श्री संजीव कुमार जी सहपत्निक, सैक्टर-6, बहादुरगढ़, श्री हीरालाल जी चावला सहपत्निक, पश्चिम विहार, दिल्ली, श्री पंकज जी सहपत्निक, पंजाबी बाग, दिल्ली, श्री श्यामलाल जी सहपत्निक मुम्बई, श्री मा. ब्रह्मजीत जी सहपत्निक सैक्टर-6, बहादुरगढ़, श्री शिशिर सिसोदिया सहपत्निक श्याम विहार, दिल्ली, श्रीमती भारती सिसोदिया, श्रीमती वेदवति अध्यापिका, मुरादपुर टेकना, श्री पं. रमेश चन्द्र जी, झज्जर, श्री द्वारका प्रसाद जी शर्मा, झज्जर, श्री सुभाष जी आर्य, झज्जर, श्री ललित चौधरी सर्व परिवार सहित विकासपुरी दिल्ली, श्री यशस्कर जी, दीवान, सहपत्निक, सैक्टर-6, बहादुरगढ़, श्री रविकुमार सिंगरोहा सहपत्निक, सैक्टर-6, बहादुरगढ़, श्री राज आर्य सहपत्निक दिल्ली, श्री डॉ. वीरेन्द्र जी भारद्वाज सहपत्निक, लाईनपार, बहादुरगढ़, श्री महावीर जी सहपत्नी, नीलवाल दिल्ली, श्री अभिमन्यु जी आर्य, छिकारा सहपत्निक धर्मविहार, बहादुरगढ़, श्री विवेकानन्द शास्त्री सहपत्निक सेक्टर-7, बहादुरगढ़, श्रीमती रामदुलारी बंसल रोहिणी दिल्ली, श्रीमती सावित्री गोयल, सैक्टर-6, बहादुरगढ़, श्री अम्बरीश जी झाम, सहपत्निक, हेरीटेज सिटी गुरुग्राम, श्री सत्यदेव जी वशिष्ठ सहपत्निक बहादुरगढ़, श्री दीपक जी सहपत्निक निरोगकुंज, सैक्टर-7, बहादुरगढ़, श्री करतार सिंह जी टीकरी दिल्ली, श्री उमेद सिंह जी आर्य माजरी, हरियाणा, श्री धर्मदेव जी खुराना सहपत्निक सुपुत्र श्री सुमित खुराना सहपत्निक, अमित खुराना, रोहिणी दिल्ली यजमान आसनों को सुसोभित किया। यज्ञोपरांत प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री धनीराम जी बेधड़क, श्री ध्रुव शास्त्री श्री रामदेव जी आर्य, श्री पुरुषार्थ मुनि जी, श्रीमती मोहिनी देवी, श्रीमती सवित्री चावला दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र जी वैदिक श्री आजाद सिंह जी छिल्लर आदि के प्रेरणादायक भजन होते रहे। **वक्ता:** श्री कन्हैयालाल जी आर्य, श्री स्वामी रामानन्द जी

सरस्वती, श्री हीरालाल जी चावला, श्री रवि शास्त्री जी, श्री नारायण सिंह जी महोपदेशक आ. प्र. पंजाब आचार्य, चाँद सिंह जी श्री आर्य तपस्वी जी दिल्ली आदि विद्वानों के प्रवचन होते रहे।

आर्य महिला जागृति सम्मेलनः- वेद, यज्ञ, योग साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के

तत्वावधान में 52वां स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर स्वामी धर्ममुनि जी मुख्य अधिष्ठाता आश्रम के निर्देशन में 30 सितम्बर सायं 4 बजे विशाल आर्य महिला जागृति सम्मेलन का आयोजन अत्यंत हर्ष एवम उल्लास के साथ किया गया। महिला सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमती सुदेश जी, कालड़ा, मन्त्राणी स्त्री, आर्य समाज पश्चिम विहार दिल्ली ने की। **मुख्य अतिथि** श्रीमती संतोष कौशिक धर्मपत्नी श्री नरेश कौशिक विधायक बहादुरगढ़ **विशिष्ट अतिथि** श्रीमती रूकमेश सांगवान आर्या सैक्टर-6, बहादुरगढ़ श्रीमती वेदवती अध्यापिका रहीं। इस अवसर पर अनेकों विदुषी महिलाओं के भजन व प्रवचन हुए एंव कन्या गुरुकुल लोवां कलां की छात्राओं के भजनों व्यख्यानों और योग आसानों का प्रदर्शन अत्यंत प्रभावशाली रहा। **सम्मेलन की संयोजितका** श्रीमती डॉ. सुरेश मलिक सैक्टर-6, बहादुरगढ़ द्वारा कुशलता पूर्वक किया गया।

चरित्र निर्माण सम्मेलन- 1 अक्टूबर को चरित्र निर्माण सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन की **अध्यक्षता** श्री कैप्टन महेन्द्र सिंह जी तंवर मुम्बई वाले वैदिक वृद्धाश्राम के विशिष्ट सदस्य रहे। **मुख्य अतिथि** श्री उमेद सिंह जी डरोलिया काठमण्डी

बहादुरगढ़, **विशिष्ट अतिथि** मा. ब्रह्मजीत जी आर्य प्रधान आर्य समाज सैक्टर-6, बहादुरगढ़ भजन राधेश्याम जी आर्य, ध्रुव शास्त्री, रविन्द्र आर्य, श्रीमती सुदेश संदूजा आदि के मनोहर भजनों का कार्यक्रम रहा। **वक्ता** श्री जयपाल जी दहिया, श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी संचालक ए.एस., आत्मशुद्धि आश्रम फर्रूखनगर आचार्य अखिलेश्वर जी आदि वक्ताओं ने चरित्र निर्माण मानव उत्थान के लिए अत्यन्त सारगर्भित प्रवचन हुए। **संयोजक** आचार्य चाँद सिंह जी द्वारा किया गया।

आश्रम स्थापना दिवस समारोह- मंगलवार 2 अक्टूबर प्रात 5 बजे से 7 बजे तक चले योग साधना शिविर का समापन आचार्य चांद सिंह जी के नेतृत्व में हुआ। ऋग्वेद बृहद यज्ञ की पूर्ण आहुति 10 बजे

अनेकों दम्पत्तियों द्वारा की गई। तत्पश्चात् आश्रम स्थापना दिवस समारोह प्रारंभ हुआ। समारोह की **अध्यक्षता** डॉ. अनिल आर्य (अध्यक्ष के.आ. यु. परिषद, दिल्ली) रहे। **मुख्य अतिथि**- श्री नफेसिंह

जी राठी पूर्व विधायक बहादुरगढ़ रहे। **विशिष्ट अतिथि**- मा. रामपाल जी आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा।

समारोह का प्रारंभ श्री धुव्र शास्त्री जी के सुन्दर भजन के साथ किया। इस अवसर पर श्री कर्मवीर जी राठी, श्री श्री ओम अहलावत, श्री प्रभुदयाल चुटानी, श्री बी.डी. लाम्बा प्रधान आर्य समाज पश्चिम विहार। श्री जगदीश मलिक आर्य आर्य समाज प्रधान नजफगढ़ दिल्ली, श्री अमर सिंह जी सहरावत प्रधान आर्य समाज उत्तम नगर दिल्ली आदि अनेकों आर्य समाजों के अधिकारीगण भिन्न-भिन्न स्थानों से पधारे। इस अवसर पर कैप्टन मान सिंह दलाल, डॉ. राजन मान कन्या गुरुकुल लौवा कलां। डॉ. शिवकुमार शास्त्री वानप्रस्थ आश्रम हरिद्वार आचार्य चन्द्रशेखर जी शास्त्री धर्माचार्य आर्यसमाज विकासपुरी, श्री सत्यपाल जी वत्स, आश्रम ट्रष्ट मन्त्री, श्री योगाचार्य योगेन्द्र जी, आचार्य चांद सिंह जी, स्वामी केसवानन्द जी, श्री मनुदेव शास्त्री, श्री रमीकेश जी ओहल्याण अनेकों महानुभावों ने अपने संबोधनों में आश्रम द्वारा किये जा रहे कार्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा की। भजन श्री पं. जय भगवान जी श्री लक्ष्मण सिंह श्री रामानन्द जी, पं. रमेश जी श्रीमती प्रवीण आर्या आजाद सिंह जी, कन्या गुरुकुल लोवां कला की छात्राओं के सुमधुर भजनों का कार्यक्रम रहा। उपस्थिति को देखकर **संयोजक** राजवीर जी आर्य ने कहा कि। यह स्वामी धर्ममुनि का पुरुषार्थ है। आप उनके स्नहे में खिचें चले आते हैं। सभी का धन्यवाद करते हुए। स्वामी जी ने कहा कि मैं आप सभी का आभार प्रकट करता हूँ और आपके सहयोग और प्यार से आश्रम चल रहा है। व्यवस्थापक श्री विक्रम देव जी शास्त्री (नैष्ठिक) ब्र. कर्ण आर्य, श्री सुखपाल जी धर्मपत्नी रूपवती के कार्यों व व्यवस्था की सभी आगंतुकों ने प्रशंसा की। पूज्या माता श्रीमती कृष्णा झाम के सुपुत्र श्री अम्बरीश जी झाम सी.ए., श्रीमती ज्योति झाम, हैरीटेज सिटी गुरुग्राम के सहयोग से स्वादिष्ठ भोजन की व्यवस्था की गई। सभी ने सामूहिक रूप से भोजन का आनन्द लिया। आश्रम परिवार उनकी सुख समृद्धि एवं दीर्घ आयु की मंगल कामना करता है।

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	35.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	45.00	रु. प्रति किलो
विशेष	55.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	75.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	130.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

वैदिक यज्ञ, भजन, प्रवचन, अभिनन्दन कार्यक्रम हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र, भट्टी गेट झज्जर में वैदिक यज्ञ, भजन, प्रवचन, अभिनन्दन कार्यक्रम हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा एवं कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. एच.एस. यादव पूर्व प्राचार्य राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय झज्जर, मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता आर्य नेता आचार्य यशवीर जी बोहर (रोहतक) मुख्य यजमान श्रीमती मामकोर एवं श्री रती राम आर्य रहें। लगभग 75 छात्र-छात्राओं ने हाथों के सूक्ष्म व्यायाम का शानदार प्रदर्शन किया। डॉ. एच. एस. यादव ने बताया कि सब बुराइयों का मूल कारण अज्ञानता (असत्यता) के साथ-साथ पर्यावरण के मूल तत्व वायु-जल आदि का विषैला होना है। सत्य प्रमाणों के साथ तार्किक सोच से अज्ञानता दूर होती है। वायु-जल की शुद्धि के लिए वृक्ष लगाना तथा गोघृत-जड़ी बुटियों से निर्मित सामग्री से हवन करना चाहिए। आचार्य यशवीर आर्य ने बताया कि हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि हम ईशकृपा से आर्य बनें। आर्य समाज के लिए सौभाग्य की बात तब होगी जब हमारी वजह से आर्य समाज संगठन उन्नत होगा। देखने में आता है जिन आर्य परिवारों में प्रतिदिन ब्रह्मयज्ञ (निराकार ईश्वर का ध्यान), देवयज्ञ (हवन) एवं अच्छी पुस्तकों का स्वाध्याय प्रतिदिन होता है वही परिवार सच्चे अर्थो में आर्य समाज रूपी अपनी माँ की उन्नति में सहायक बनते हैं। हमें देवताओं के बारे में शुद्ध ज्ञान होना चाहिए जगत में 33 देवता है जो इस प्रकार है-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र 8 वसु देवता, 5 प्राण, 5 उपप्राण और जीवात्मा 11 रूद्र देवता, बारह देसी महीने 12 आदित्य देवता, बिजली (इन्द्र) और यज्ञ (प्रजापति) 2 देवता। सब देवताओं का स्वामी महोदव निराकार परमात्मा है।

आदर्श अध्यापिकाएं श्रीमती सुमित्रा, अनिता एवं विमला देवी ने बताया कि ईश्वर उपासना से ईश कृपा से दिव्य गुणों की प्राप्ति होती है। भजनोपदेशक पं. जयभगवान आर्य, आर्य समाज झज्जर के प्रधान प्रा. द्वाराकादास, वैदिक सत्संग मण्डल समिति झज्जर के प्रधान पं. रमेशचन्द्र वैदिक ने बताया कि आर्य (श्रेष्ठ)

व्यक्तियों की कथनी-करणी में एक रूपता रहती हैं। लाला प्रकाशवीर, सूर्यप्रकाश, श्रीभगवान सिंह, ओमप्रकाश यादव, चमनलाल ए.एस.ई., रोशनी आर्या, सोनिया आर्या, रामअवतार, प्रदीप शास्त्री, कृष्ण शास्त्री, हरपाल शास्त्री, ब्र. कृष्ण, राजेन्द्र, मा. पनसिंह, महासिंह, आत्माराम, अभिषेक, कार्तिक, मनस्वी, साक्षी, रिमझिम आदि गणमान्य महानुभाव एवं होनहार बच्चें उपस्थित रहें। मुकेश आर्य ने सभी का धन्यवाद किया।

-सुभाष आर्य झज्जर, मो. 9813356991

श्रद्धापूर्वक जन्मदिवस मनाया गया

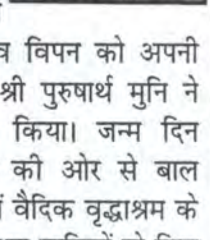

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में श्री सतीश सन्दुजा एवं श्रीमती सुदेश सन्दुजा के पौत्र आयुष्मान विपन का 5वां जन्मदिवस यज्ञ वैदिक रीति से मनाया गया। इस अवसर पर सभी आश्रम वासियों ने चिरंजीव विपन को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं दी। श्री पुरुषार्थ मुनि ने एक सुन्दर भजन प्रस्तुत किया। जन्म दिन मुबारक हो पाते। परिवार की ओर से बाल कल्याण सदन के छात्रों एवं वैदिक वृद्धाश्रम के वृद्धी सहित सभी अन्य आश्रम वासियों के लिए सुन्दर जलपान की व्यवस्था की गई।

आर्य रत्न से पं. रमेश चन्द्र वैदिक सम्मानित

वैदिक सत्संग मण्डल समिति झज्जर के अध्यक्ष आर्य रत्न, पं. रमेश चन्द्र वैदिक को जिला प्रशासन द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में बेटी बचाओ अभियान, समाज सुधार, स्कूल व कॉलेजों में पिछले 3 साल से चलाए जा रहे व्याख्यान माला कार्यक्रम जिसमें विद्यार्थियों को संस्कारित करने के लिए कार्यक्रम किया जाता है व केरल बाद पीड़ितों के विशेष सहायता के लिए श्री ओ.पी. सिंह ए.डी.जी.पी. श्रीमती सोनल गोयल उपायुक्त झज्जर द्वारा प्रशंसा प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। ज्ञात रहे कि श्री वैदिक को जिला प्रशासन द्वारा स्वतन्त्रता दिवस व गणतन्त्र दिवस पर भी सम्मानित किया जा चुका है। तथा अनेक धार्मिक व शिक्षा संस्थानो द्वारा व आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। संस्था द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों में स्वामी धर्ममुनि आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, कुमारी पूनम आर्या राष्ट्रीय अध्यक्ष बेटी बचाओ अभियान व कुमारी प्रवेश आर्या संयोजक बेटी बचाओ अभियान तथा समिति के महासचिव द्वारकादास, संरक्षक रिटायर प्राचार्य एच.एस. यादव, सुभाष आर्य, सुबेदारभरत सिंह हैं, भगवान सिंह आर्य, राव रतीराम, श्रीमती सीतादेवी व मन्जु सैनी का सहयोग रहा है। समिति द्वारा प्रतिभाशाली बेटीयों को सत्यार्थ प्रकाश व चरित्र निर्माण संबंधित साहित्य देकर सम्मानित किया जाता है। हमारे पुस्तकें विद्यालयों में बांटी जा चुकी है।

पूज्यपाद स्वामी धर्ममुनि जी महाराज 'दुग्धाहारी' के

83 वें जन्मदिवस के शुभावसर पर

स्वामी धर्ममुनि जी महाराज 'दुग्धाहारी'

बृहद्यज्ञ एवं भजन संध्या मंगलवार 20 नवम्बर 2018

बृहद् यज्ञ सुर और संगीत का भव्य आयोजन

आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी पूज्य स्वामी चितेश्वरानन्द जी सरस्वती योग-यज्ञ विशेषज्ञ तपोवन देहरादून, उत्तराखण्ड की अध्यक्षता में

मध्याह्नोपरान्त् 2.30 बजे से 7.00 बजे तक तत्पश्चात् ऋषिभोज

गायक कलाकारः

इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक आमंन्त्रित किए गए हैं।

संयोजकः राजवीर आर्य

निवेदकः सत्यानन्द (प्रधान), कन्हैयालाल (उपप्रधान), दर्शन कुमार अग्निहोत्री (मन्त्री), सत्यपाल वत्स आर्य (उपमंत्री) आत्मशुद्धि आश्रम (पं. न्यास), बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), चलभाषः 9416054195, 9896578062

सूर्य का आविर्भाव

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

धीरासः पदं कवयो नयन्ति,
नाना हृदा रक्षमाणा अजुर्यम।
सिषासन्तः पर्यपश्यन्त सिन्धुम्,
आविरेभ्यो अभवत् सूर्यो नन्॥

ऋग् 1.146.4

ऋषिः **दीर्घतमाः**। देवता **अग्निः**। छन्दः **तिष्टुप**।

(धीरासः) धीमान् **(कवयः)** अन्तदर्शी लोग **(नाना)** अनेकविध **(हृदा)** हृदय से **(रक्षमाणाः)** रखवाली करते हुए **(अजुर्यम्)** अजर परमेश्वर को **(पदं)** आराध्य-पद पर **(नयन्ति)** ले जाते हैं, प्रतिष्ठित करते हैं। **(सिषासन्तः)** भक्ति के इच्छुक **(वे)**। **(सिन्धुम्)** **(गुणों के)** सिन्धु **(उस परमेश्वर)** को **(तथा)** **(नृन)** **(उसके)** नेतृत्व-सामर्थ्यो को **(पर्यपश्यन्त)** साक्षात् करते हैं। **(सूर्यः)** सूर्य **(एभ्यः)** इनके लिए **(आविः अभवत्)** आविर्भूत हो जाता है।

संसार में दो प्रकार के मनुष्य होते है, धीर और अधीर। अधीर (अविवेकी) लोग इसमें विश्वास नहीं करते कि कोई तेजोमय शक्ति (अग्नि परमेश्वर) है जो इस सारे विश्व का संचालन करती है। परन्तु जो धी (विवेकी) और कवि (अनंतद्रष्टा) जन होते हैं, वे परमेश्वर में पूर्णतः विश्वास रखते हैं। वे आस्तिक लोग अजर-अमर परमेश्वर को आराध्य-पद पर प्रतिष्ठित करते हैं और सच्चे भाव से उसकी आराधना करते हैं। उनके आराध्यदेव को मन की दस्यु-वृत्तियाँ कहीं चुरा न ले जायें इसके लिए भी वे सतर्क रहते हैं। वे हृदय की अनेक विध सद्वृत्तियों को नियुक्त कर देते हैं जो उनके अर्चनीय देव की सतत चौकसी करती रहती है। इस प्रकार अपने उपास्य अग्नि प्रभु की रखवाली का पूर्ण प्रबन्ध कर धीर उपासक कवि लोग प्रभु-भक्ति का पवित्र यज्ञ रचाते हैं। गुणों के सिन्धु उस परम प्रभु की पुनः अर्चना करते हैं। जब उनकी भक्ति-अर्चना चरमोत्कर्ष पर पहुँच जाती हैं, तब अन्ततः उन्हें प्रभु का साक्षात्कार हो जाता है। वे प्रभु को हस्तामलकवत् अपने सम्मुख स्थित पाते हैं जिसे देख उनका रोम-रोम हर्षित हो उठता है। प्रभु-दर्शन के साथ-साथ वे इसका भी प्रत्यक्ष दर्शन कर लेते हैं कि किस प्रकार प्रभु अपने नेतृत्व-सामर्थ्यो से अपनी उन्नायक शक्तियों द्वारा एक निचले स्तर पर खड़े व्यक्ति को उठाकर ऊर्ध्व स्तर पर पहुँचा देते हैं। प्रभु का साक्षात्कार कर लेने के पश्चात् वे स्पष्ट रूप से देखते हैं कि उनके मानस-पटल का अन्धकार पूर्णतः विलुप्त हो गया है और उनके सम्मुख सूर्य-सम प्रखर अध्यात्म प्रकाश आविभूत हो गया है। उस विराट् ज्योति को उस अन्तःप्रकाश को पाकर उनके हृदय की ग्रन्थि खुल जाती है, समस्त संशय विच्छिन्न हो जाते हैं।

आओ, हम भी अग्नि प्रभु को आराध्यदेव के रूप में हृदय में प्रतिष्ठित करें और सद्गुणों के सिन्धु उस परम प्रभु का साक्षात्कार कर अपने अन्तरात्मा में सूर्य-सम ज्योति को अवतीर्ण करें।

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला. झज्जर (हरियाणा)
पिन-124507, चलभाष : 09416054195

सम्पादकीय

नशों के मकड़जाल में फंसता हमारा समाज

- राजवीर आर्य

महात्मा गांधी जी कहा करते की देश स्वतन्त्र होने पर पहली कलम से जो निर्णय होगा वह शराब बन्दी और गौ हत्या पर प्रतिबन्ध होगा। कुछ परिस्थितियां ऐसी रही होंगी जिनसे यह निर्णय वे नहीं करवा सके। आज जिन नशों का प्रचलन है उनमें शराब, चरस, भांग, अफीम, स्मैक, चुरा पोस्त, भांग, मार्फिन, हेरोईन, कोकीन, पान मसाला, गुटका, बीड़ी, सिगरेट, ई-सिगरेट, हुक्का, नशीली गोलियां, इंजेक्शन व कफ सिरिप के रूप में सेवन करने का है। भारतवर्ष में पंजाब, महाराष्ट्र, गोवा, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडू, राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली व आदिवासी पिछड़े क्षेत्रों में ज्यादातर नशों का सेवन किया जाता है। वर्तमान में पंजाब में सबसे ज्यादा नशा किया जाता है। पंजाब एक बार तो खालीस्तान के चक्कर में जला और अब नशों से पंजाब जल रहा है। एक ही महिने में नशों के कारण 23-23 लोगों की मृत्यु हो रही है। युवा पीढ़ी भयंकर चपेट में आ गई है। हरियाणा के अन्दर शराब, चरस और तम्बाकू पीने का ज्यादा प्रचलन है। शराब तो बड़ी सुगमता से सरकार ही उपलब्ध करा रही है, जहाँ तक चरस (सुल्फा) का प्रश्न है यह गांव के अन्दर जो शुल्फैड़ी तथाकथित बाबा मन्दिरों में बैठे हैं, उनके द्वारा इसकी सिखलाई व सप्लाई की जाती है। तम्बाकू का सेवन तो रिति-रिवाजों में सम्मिलित हो गया है। फरमान जारी कर दिया जाता है कि हुक्का-पानी बन्द कर देंगे जैसे यह कोई आक्सीजन का सिलेण्डर हो। जो नहीं पीते उनका कैसे हुक्का बन्द करोगे? स्वामी ओमानन्द सरस्वती अपनी पुस्तक "पापों की जड़ शराब" में लिखते है कि शराब पीने वाला निर्लज हो जाता है और फिर वह कोई भी पाप कर्म करने से नहीं हिचकिचाता। आज अगर देखा जाये तो ज्यादातर अपराध व दुष्कर्म शराब के नशे में ही किये जाते है। हम चरस की बात कर रहे थे। इसका बहुत बड़ा व्यापार हरिद्वार से कावड़ियों के माध्यम से भी होता है। भांग का ज्यादा प्रचलन उतर प्रदेश के मथुरा इत्यादि धार्मिक स्थलों पर ज्यादा है। भांग के विषय में प्रसिद्ध है कि बुद्धि को नष्ट करके मनुष्य को पागल बना देती है। अगर कोई उल्टी-उल्टी बाते करता है तो कहावत प्रचलित है कि 'क्या भांग पी रखी है? शराब के नशे बिना कोई भी पार्टी स्तरीय नहीं मानी जाती है। हरियाणा का किशोर व नवयुवक विवाह-शादियों में ही शराब पीना सीखता है। 'चस्का फिर नहीं किसी को बसका' वाली बात से उसका जीवन नष्ट हो जाता है। एक शराबी से पुरा परिवार व रिश्तेदार प्रभावित होते हैं। नशीली गोलियों के सेवन से ही तमिल में 205, पंजाब में 186, हरियाणा में 76, केरल में 64 तथा मध्य प्रदेश में 40 व्यक्तियों की मृत्यु के आंकड़े है, ये आकड़े 2014 के हैं, और वास्तविकता तो इससे ज्यादा है। सरकार के पास नशों से मरने वालों का पुरा रिकॉर्ड नहीं है। इससे होने वाली बीमारियों और उनके कारण मृत्यु का भी पुरा रिकार्ड नहीं है।

ई-सिगरेट:- आजकल बड़े-बड़े शहरों में ई-सिगरेट का प्रचलन बढ़ रहा है। यह ई-सिगरेट क्या होती है, इसको जान लेना आवश्यक है। इसका सबसे पहले प्रचलन युरोप के देशों में शुरु हुआ है। इसे रूयान कहते है, जिसका अर्थ सिगरेट जैसा जायका होता है। यह दिखने में सिगार या सिगरेट जैसा एल्कट्रोनिक्स उपकरण होता है। जिसमें निकोटीन व गलैसरीन जैसे तरल पदार्थ भर दिये जाते है। इस उपकरण में एक छोटी सी बैटरी होती है। बटन दबाते ही पाईप को सिगरेट की तरह पीने से सिगरेट जैसा ही अनुभव होता है। इसका सबसे ज्यादा प्रचलन मुम्बई जैसे महानगरों में है। अध्ययनों में इस ई-सिगरेट के सेवन से कैंसर, दमा तथा अनेक बीमारियों का होना पाया गया है। जो रईसजादे इसको सेवन करना अपना स्टेटस सिम्बल मानते है, वे सावधान हो जाये कि आप रोगों के घोर घने जंगल में प्रवेश कर रहे है।

बिड़ी, सिगरेट, पान, मसाला, गुटका, तम्बाकु व हुक्का पीना भी एक व्यसन में सम्मिलित है। आज जो विश्व भर में इनसे होने वाली बीमारियों विशेषतया

कैंसर के आकड़े चौकाने वाले है। मुंह के कैंसर के 80 प्रतिशत रोगी पान, गुटका व तम्बाकू के सेवन से ही पाये जाते है। आजकल हुक्का बार खुल गए है। गांवों के अन्दर नौजवानों के समुह के समुह हुक्का पीते हुये दिखाई देंगे। इनके सेवन से फेफड़ों सम्बन्धी रोगों की उत्पति हो रही है। तम्बाकु के सेवन से हृदय, अल्सर, टी.बी. और घाव भरने में अधिक समय लगना जैसी भी बीमारियां होती है। भारतवर्ष में लगभग हर तीसरा-चौथा व्यस्क व्यक्ति किसी ना किसी रूप में तम्बाकू का सेवन करता है। केवल मात्र बीड़ी पीने वाले की ही सन् 2011 में पांच लाख अस्सी हजार व्यक्ति मौत के मुंह में चले गयें। पान, गुटका, मसाला और सिगरेट जैसे तम्बाकु से होने वाली मृत्यों के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन एक अध्ययन के अनुसार प्रत्येक छः सैकण्ड में तम्बाकु से एक मृत्यु हो रही है। यही नहीं टी.ओ.आई. कि रिपोर्ट के अनुसार तम्बाकू लोगों के स्वास्थ्य और जेब दोनों पर डाका डालता है। जिससे देश की अर्थव्यवस्था पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। तम्बाकू के सेवन से चौंकाने वाले डाटा सामने आये हैं जो इस प्रकार है।

इंडियन कौंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च के अनुसार भारत में कैंसर से होने वाली तीस प्रतिशत मृत्यु दर तम्बाकू के सेवन से होती है। जिसमें 42 प्रतिशत पुरुष और 18.3 प्रतिशत महिलाएं होती है। तम्बाकू के अन्दर जो कैमिकल्ज प्रयोग होते हैं, उनकी पहचान कैंसर उत्पन्न करने वाली पाई गई है। विज्ञापनों पर रोक और सार्वजनिक स्थानों पर प्रतिबन्ध के पश्चात् भी इसका खुले आम प्रयोग देखा जा सकता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि यदुवंशियों का नाश शराब ने किया। पृथ्वीराज चौहान का नाश शराब ने किया। भारत वर्ष देश को गुलाम शराब ने किया। आंज के लगभग 1500 वर्ष पूर्व चार नशों का प्रचलन ज्यादा था। शराब, चरस, भांग और अफीम। राजपूत लोग शराब पीकर उत्पात मचाते थे और आपस में ही लड़-भिड़ कर कमजोर हो जाते थे। चरस का प्रयोग भक्ति और मुक्ति का साधन बताया जाने लगा। भांग का प्रयोग शत्रु की सेना के भोजन व स्वयं चिकना माल गटकने में किया जाता था। अत्यन्त परिश्रम का कार्य करने वाले अफीम का सेवन करते थे। बाकि नशे जिनका प्रचलन वर्तमान में है यह उपरोक्त नशों के एक्सट्रैक्ट निकाल कर उल्टे-फुल्टे कैमिकल्ज मिलाकर तैयार किये जाते है। तम्बाकू का प्रचलन मुस्लिम संस्कृति की देन है। अब यह सब कुछ होने के बाद निष्कर्ष निकलता है कि क्या उपाय किये जाये, जिससे इन नशों से हमारे देश को मुक्ति मिले। सर्वप्रथम उपाय तो यह है कि सभी धार्मिक, सामाजिक व अन्य संगठन किशारों, नवयुवकों व अन्य वर्ग के लिए नशों से होने वाले दुष्परिणामों और गम्भीर बीमारियों सम्बन्धी जागरूकता अभियान चलाकर उनको सचेत करें। दूसरा सरकारें इस राजस्व के लालच को त्याग कर गुजरात व बिहार से शिक्षा लेकर शराब पर प्रतिबन्ध लगायें। एक राज्य से दूसरे राज्य यहां तक पाकिस्तान से भी हो रही तस्करी को रोकें। प्रशासन अपनी जिम्मेवारी पूर्ण रूप से निभाये तो भी बहुत कुछ अंकुश लग सकता है। स्कूल के पाठ्यक्रमों में शराब व तम्बाकू इत्यादि नशों के दुष्परिणामों के विषय में सामग्री रखी जाये। स्कूलों व कॉलेजों में प्रभावशाली वक्ता अपना नैतिक कर्तव्य समझ कर जाये, और मैं समझता हूँ कि आर्य समाज इस चुनौती को स्वीकार करके देश के होनहार उज्जवल भविष्य के कर्णधारों को इन व्यसनों से दुर रहने की शिक्षा प्रदान करें तो अवश्यमेव ही लाभ प्राप्त होगा।

इसके साथ-साथ किसी भी प्रकार की सरकारी नौकरी में कार्यरत व्यक्ति किसी भी प्रकार के नशे का सेवन करता है तो तुरन्त सेवामुक्त कर दिया जाए। शिक्षक, रक्षक, चिकित्सक, चालक एवम् राजनेताओं पर तो कम से कम तुरन्त सख्त कार्यवाही हो। लेकिन ऐसा कानून बनाए कौन? रक्षक ही भक्षक बने बैठे हैं।

सामाजिक क्रान्ति के लिए ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ें तथा अपने जीवन को प्रकाशित कर अन्य को प्रकाशित करने में सहयोग करें। **–विक्रमदेव शास्त्री**

ईश्वर के सन्निकट रहें

- महात्मा चैतन्यस्वामी

यह एक बहुत ही आश्चर्यजनक बात है कि बहुत से लोग ऐसे है जो ईश्वर के अस्तित्व को ही नहीं मानते है। वास्तविकता यह है कि यदि समूचे ब्रह्माण्ड में एक व्यवस्था है तो किसी न किसी व्यवस्थापक को तो मानना ही पड़ेगा क्योंकि बिना किसी व्यस्थापक के व्यवस्था बन ही नहीं सकती है। इसीलिए कहा जाता है-If universe is an organised matter then there must be a organiser. बहुत से लोगों का यह भी मानना है कि जितने भी बड़े-बड़े वैज्ञानिक आदि हुए हैं वे भी ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते थे जबकि वास्तविकता यह है कि लगभग सभी उच्चकोटी के वैज्ञानिक न केवल ईश्वर के अस्तित्व को मानते थे बल्कि उन्होंने ईश्वर का पग-पग पर धन्यवाद किया है कि यदि ईश्वर पांच महाभूतों में मूलभूत गुण स्थापित न करते तो हम कोई आविष्कार कर ही नहीं सकते थे। ईश्वर वैज्ञानिकों का भी महावैज्ञानिक है क्योंकि उसने ही अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी और आकाश इन पांच महाभूतों में मूलभूत गुण एवं शक्तियां स्थापित की है। पृथिवी में गुरुत्वाकर्षण न्यूटन ने स्थापित नहीं किया बल्कि उसने इस बात की खोज की है। गुरूत्वाकर्षण स्थापित करने वाला तो परमात्मा हैं। इसी प्रकार अग्नि का स्वभाव ऊपर को उठने का है। अग्नि को आप चाहे बहुत बड़ी-बड़ी मोटी लोहे की चादरें बिछाकर रोकने का प्रयास करें मगर अग्नि फिर भी ऊपर को ही उठने का प्रयास करेगी... जल को चाहे जितना भी ऊँचे से ऊँचा ले जाएं मगर उसकी स्वाभाविक गति नीचे को बहने की ही है.... इसी प्रकार वायु और आकाश में जो भी मूलभूत गुण व स्वभाव हैं से ईश्वर द्वारा ही स्थापित हैं.... इनमें कोई किसी प्रकार का भी परिवर्तन नहीं कर सकता है... हां इनके आधार पर आगे से आगे कई प्रकार के आविष्कार आदि किए जा सकते हैं....

आश्चर्य तो इस बात का भी है कि जो ईश्वर को मानते हैं वे भी ईश्वर को लेकर बहुत अधिक भ्रमित हैं। दुर्भाग्य से आज हमारे समाज में इतने अधिक मत, मजहब और संप्रदाय बन गए हैं कि सबने अपनी अलग-अलग मान्यताएं बना रखी हैं। इसकी सबसे बड़ी हानि यह हुई है कि हमारी नई पीढ़ी धर्म, कर्म, ईश्वर आदि के बारे में बहुत भ्रमित हो गई है। नई पीढ़ी बहुत मेधावी है अत: वह मत, मजहब तथा सम्प्रदायों के ढगोसलों में तो आती नहीं है मगर बिना किसी गाईड-लाईन के सही दिशा में भी नहीं जा पाती है। अन्ततः धर्म, कर्म, सत्य एवं ईश्वर आदि से उनका विश्वास ही उठ जाता है। हां यदि उन्हें सही-सही दिशा-निर्देश देने वाला कोई वैदिक आचार्य मिलता है तो वे सन्तुष्ट हो जाते हैं क्योंकि आज की पीढ़ी हर बात के लिए लौजिक मांगती है। ऐसी स्थिति में परमात्मा द्वारा आदि सृष्टि में दिया गया ज्ञान ही हमारा सही दिशा-निर्देश कर सकता है। क्योंकि वेद किसी मत, मजहब व सम्प्रदाय के नहीं बल्कि मनुष्य मात्र के लिए स्वयं परमात्मा द्वारा आदिसृष्टि में दिया गया संविधान है... दिशा निर्देश है. .. यदि ईश्वर की बात करें तो वेद इस सम्बन्ध में कहता है कि परमात्मा इस सृष्टि के कण-कण में विराजमान है.... सर्वव्यापक है.... वह दिखाई इसलिए नहीं देता है क्योंकि वह इन भौतिक आंखो का विषय नहीं बल्कि आत्मा का विषय है... वह आत्मा से अनुभूत होने वाला तत्व है... यह ठीक है कि स्वाध्याय, सत्संग, प्राणायाम तथा योगाभ्यास आदि के द्वारा ही हमारी आत्मा ईश्वरानुभूति होने के योग्य बन सकेगी मगर हम इतना तो कर ही सकते हैं कि अपने आस-पास ईश्वर के अस्तित्व को वैचारिक स्तर पर निरन्तर अनुभव करें। क्योंकि ईश्वर कण-कण में विराजमान है अत: ऐसा मानना ही चाहिए कि ईश्वर हमारे बहुत ही समीप है.... निकट है.... बल्कि सबसे अधिक निकट ईश्वर ही हैं....

परमात्मा को अपने सन्निकट समझने से हमारी बहुत ही समस्याओं का समाधान स्वत: ही हो जाता है। जो परमात्मा को सर्वव्यापक तथा अपने अति-निकट समझता है वह बुरे कर्म करने से बच जाता है। क्योंकि उसका व्यवहारिक चिन्तन बन जाता है कि

परमात्मा मुझे हर समय, हर घड़ी व हर पल देख रहा है.... जब इस प्रकार का चिन्तन बनता है कि वह ईश्वर मुझे देख रहा है तो मैं बुरा काम कैसे कर सकता हूँ.... उसे यह भी लाभ होता है कि उसे परमात्मा की न्याय-व्यवस्था पर पूर्ण व्यवस्था पर पूर्ण विश्वास हो जाता है। वह यह मानकर चलता है कि यदि मैं बुरा काम करूंगा तो परमात्मा मुझे दण्ड देंगे और यदि अच्छा कर्म करूंगा तो मुझे प्रभु पुरस्कृत करेंगे। ऐसा चिन्तन करने के बाद भला कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो पुरस्कृत नहीं बल्कि दण्डित होना चाहेगा... प्रभु को सर्वव्यापक मानने वाला व्यक्ति सभी पापों और दु:खों से दूट जाता है क्योंकि प्रभु को सर्वव्यापक मानने से वह समस्त दुरितों से दूर रहता है। अन्ततः दुरित ही हमारे पापों का तथा दु:खों का कारण बनते है अत: इस प्रकार से परमात्मा को अपने सन्निकट मानने वाला व्यक्ति इनसे मुक्त हो जाता है. ... ऐसा व्यक्ति सब प्रकार से निर्भय हो जाता है। यह वास्तविकता है कि परमात्मा हमारे आस-पास हर समय मौजूद है और यह भी एक धुव सत्य है कि परमात्मा से शक्तिशाली कोई और दुनियां में न है और न ही होगा। इस प्रकार के जब सर्वशक्तिमान परमात्मा को हम अपने आस-पास हमेशा अनुभव करेंगे तो भला हमें किसी से किसी प्रकार का भय कैसे रहेगा....? ऐसा मानने वाले व्यक्ति को ईश्वरप्रणिधान की सिद्धि भी प्राप्त हो जाती है अर्थात् वह मन, वचन व कर्म से परमात्मा के प्रति समर्पित हो जाता है। इस समर्पण से उसे बल, तेज, ओज और अपार शक्ति प्राप्त होती है....

प्रभु को अपने सन्निकट समझने वाला व्यक्ति एकदम आत्मविश्वास से परिपूर्ण हो जाता है। एक बार हमने एक शिविर में एक विद्यार्थी से पूछा कि हमें परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना व उपासना क्यों करनी चाहिए तो उसने बहुत ही भोलेपन से उत्तर दिया कि हमारे ऐसा करने से परमात्मा प्रसन्न होता है। मैंने उससे कहा कि इकस मतलब तो यह हुआ कि यदि हम प्रभु की स्तुति आदि नहीं करेंगे तो परमात्मा दु:खी रहेगा... इसका अर्थ तो यह हो गया कि हम परमात्मा से बड़े हो गए क्योंकि जब चाहें हम उसे प्रसन्न कर दें और जब चाहें उसे दु:खी कर दें... वह मुझे जब बेचारगी से देखने लगा तो मैंने कहा कि परमात्मा तो सर्वदा आनन्द स्वरूप है। वह हमारी स्तुति आदि करने से प्रसन्न नहीं होता है और यदि हम उसकी स्तुति आदि न करें तो वह दु:खी भी नहीं होता है। वास्तव में परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का फल यह होता है कि हम आत्मविश्वास से परिपूर्ण हो जाते हैं। जीवात्मा अल्पज्ञ है और अल्पज्ञ होने के कारण हमें अपने से किसी बलवान की हर समय आवश्यकता अनुभव होती रहती है और जब कोई अपने से बहुत बलवान मिल जाता है तो हम निश्चित और आत्मविश्वासी हो जाते हैं। इसीलिए किसी ने बहुत अच्छी बात कही है- If there is no God then creat God. गीता में घबराए हुए अर्जुन को श्रीकृष्ण द्वारा विराट-रूप दिखाने का यही लक्ष्य था कि मैं अर्जुन को आत्मविश्वास से परिपूर्ण कर दूँ। अपने इस कृत्य में वे सफल भी हुए। जब अर्जुन को उस परमात्मा की अपार शक्ति तथा न्याय-व्यवस्था का अनुभव हुआ तो वह एकदम निर्भय हो गया.... उसका क्षत्रिय-भाव उदय हो गया और वह मोह-मुक्त हो गया... यह भी एक वास्तविक सत्य है कि जब भी व्यक्ति पर कोई महान् कष्ट आता है तो उसे परमात्मा ही याद आते हैं। एक दिन व्हाटसैप में बहुत ही सुन्दर मैसेज आया। एक छोटे से बालक का चित्र था जिसने हाथ जोड़ रखे थे और एक वाक्य लिखा हुआ था-'परमात्मा न तो मैंने आपको कभी देखा है, न ही आपसे कभी बातचीत हुई है मगर पता नहीं क्यों मुझे जब भी कोई दु:ख आता है तो आप मुझे बहुत याद आते हो।' आत्मा को दु:ख में, कष्ट में परमात्मा ही याद आते हैं क्योंकि वही हमारा असली मित्र है क्योंकि वह हमसे बलवान है। अल्पज्ञ आत्मा को अपने से बलवान उस ईश्वर की सदा ही आशा बनी रहती है....

- महादेव, सुन्दर नगर, जिला-मण्डी, हिमाचल प्रदेश

❑ आत्मबोध मानव जीवन को आन्तरिक रूप से ही नहीं अपितु बाह्य रूप से भी सौन्दर्यपूर्ण बनाता है और मानव जीवन का अन्तिम गौरव प्रकट होता है। - **विक्रम देव आर्य**

जियो भय मुक्त जीवन

-श्रीमती मनीषा विमल

महर्षि दयानन्द सरस्वती मानव मनोविज्ञान के बहुत अच्छे ज्ञाता व गंभीर चिन्तक थे। उन्होंने मनुष्य के मन व स्वभाव को बहुत गम्भीरता से जाना व समझा, इसीलिए यज्ञ व सन्ध्या में जो मन्त्र लिये गये हैं वह ऐसे मन्त्र है जो मानव व्यक्तित्व का विकास कर सकें। अथर्ववेद के दो मन्त्र जो मानव की मूल प्रवृत्ति भय के निदान के लिए 'शान्तिकरणम्' में रखे गये है, यदि उन पर मनन किया जाय तो पायेगें कि ईश्वर में विश्वास रखने वाले को किसी का भय नहीं हो सकता।

ओं अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावा पृथिवी उमे इमे।
अभयं पश्चादमयं पुरस्तादुत्तरादधरादमयं नो अस्तु॥

अथर्वद 16.15.5

भावार्थ-हे ईश्वर अन्तरिक्ष लोक हमारे लिये निर्भयता देने वाला हो, द्युलोक एवं पृथिवी लोक निभर्यता प्रदान करें। हमें आगे से, पीछे से, ऊपर से नीचे से भय न हो। हम अभय रहें।

अभयं मित्रादभयममित्रादमयं ज्ञातादमयं पुरो यः।
अभयंनक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु॥

अथर्ववेद 16.5.6॥

भावार्थ-हे जगत्पते हमें मित्र से भय न हो, शत्रु से भय न हो जाने अनजाने पदार्थो से भय रहित हो। सब दिशायें हमारे लिए मित्र सदृश्य हों।

अब प्रश्न उठता है यह 'भय' क्या है। जिससे मनुष्य इतना आतंकित रहता है कि परमात्मा से इतने सारे भयों की निवृत्ति की प्रार्थना कर रहा है। उत्तर है-भय एक मूल प्रवृत्ति है जो मनुष्य के जन्म से ही साथ रहती है। जैसे हंसना, रोना, भूख लगना शौचनिवृत्ति आदि। इन्हें हम भूल प्रवृत्ति कहते हैं, जो आत्मा के साथ जन्मजन्मान्तर तक रहती है। भय का संवेग है-डरना, जिससे शरीर के अन्दर एक रासायनिक परिवर्तन होता है। जब मनुष्य भयभीत होता है तो उसके हाथ पैर ठंडे पड़ जाते है। श्वास प्रश्वास की गति बढ़ जाती है। दिलकी धड़कन बढ़ जाती है मस्तिष्क विचार शून्य हो जाता है। मुख से आवाज नहीं निकलती है। इस प्रकार भय की यह प्रक्रिया सारे शरीर को प्रभावित करती है। 'भय' की इस मूलप्रवृति के कारण थोड़ा सा समझदार होने पर अकारण भय से ग्रसित हो जाता है। अकारण भय का तात्पर्य है। इच्छानुसार कार्य का न होना, मनुष्य का संशयशील होना।

भय ही दुःख का भूल भी होता है। जैसे कभी किसी व्यक्ति की वाहन दुर्घटना में मृत्यु होते देख ली, किसी जानवर के काटने पर मृत्यु या अत्यन्त कष्ट होते देख लिया तो मनुष्य उस पशु या वाहन से हमेशा के लिए भयभीत हो जाते हैं। बहुत सी बार इन अकारणों भयों से जीवन में हानि उठाते हैं। और अपनी प्रगति की राह में स्वयं ही बाधक बन जाते है। अकारण ही अनेक भय हमे ग्रसित किये रहते है जैसे-चोरी का भय, यश खाने, कुत्ता, बन्दर साँप के काटने का भय, दुर्घटना का भय, परीक्षा का, नौकरी न मिलने व्यापार न चलने आदि नाना प्रकार के अकारण भयों से परेशान रहते हैं। मनोवैज्ञानिक कहते है इस तरह के 5000 से अधिक अकारण भय है जो मनुष्य के जीवन को अस्त व्यस्त किये रहते हैं। इनका प्रभाव मनुष्य के स्वास्थ्य व सौन्दर्य पर बुरा ही पड़ता है। इन्हीं अकारण भयों के कारण चिन्ता, सन्देह, कायरता, अविश्वास, असहनशीलता, ईर्ष्या आदि का जन्म होता है। जिससे मनुष्य अकर्मण्य बन जाता है और अपनी कार्यकुशलता को खो देता है। भयभीत मनुष्य की इच्छायें कुण्ठित तथा महत्वाकाक्षाएं चूर हो जाती है। यहां तक कि मनुष्य का मानसिक सन्तुलन भी बिगड़ जाता है और वह अनेक रोगों का शिकार हो जाता है।

एक सत्य घटना है। मेरी एक बहन को यह भय हो गया कि उसके पति उसे कैमिस्ट के यहां से दवा लाने के बहाने जहर दे देगे, क्योंकि कैमिस्ट के यहां से दवा लाने के बहाने जहर दे देगे, क्योंकि कैमिस्ट की हर दवा में जहर मिलता है, ट्रेन में बैठने से भयभीत की ट्रैन की दुर्घटना हो जायेगी, इसी तरह के अकारण भयों के कारण वह स्वयं भी विक्षिप्त रही और परिवार वाले भी परेशान रहे जिन्दगी के पच्चीस साल इसी पागलपन व उन्माद में व्यतीत कर दिये किन्तु भयमुक्त नहीं हो सकी।

अकारण भय बाहरी वातावरण से पैदा तो अवश्य होता है किन्तु सदा सर्वदा अपनी जड़ जमा लेता है। जितना भय अपनों के अनिष्ट की आशंका से होता है, उतना परायों से नहीं होता इसीलिए वेदमन्त्र कहता है-**मित्रादथय अमित्रादययम्** किन्तु इस आन्तरिक अकारण भय को हम स्वयं ही दूर कर सकते है। जब मनुष्य पूरी तरह परमात्मा की शरण में चला जाता है, उसकी सत्यता, उसकी शक्ति को अनुभव कर लेता है तब मनुष्य की आत्मशक्ति, आत्मविश्वास व शारीरिक बल बढ़ जाता है। इन मन्त्रों के द्वारा प्रार्थना करने का यही उद्‌देश्य है कि मनुष्य ईश्वर को अपना रक्षक अपना पिता मान लेता है और यह विश्वास दृढ़ कर ले कि वह अन्तरिक्ष से द्यूलोक से, चारो दिशाओं से, हमारे मित्रों व दुश्मनों से, पृथिवी की भौतिक आपदाओं से वाहन, जीव जन्तु आदि से हर समय रक्षा कर रहा है तो हम भयभीत, क्यों हो वह तो प्रतिपल हमें अभय कर रहा है।

आत्मविश्वास पाने का, अभय होने का सबसे से अच्छा उपाय यज्ञ व योग सन्ध्या, प्रार्थना है। जब यह विश्वास दृढ़ हो जाता है कि जो होना है वह तो होकर ही रहेगा। ईश्वर की बनाई इस सृष्टि में हमारा कुछ भी वश नहीं है। हमें तो ईश्वर ने बुद्धि दी है। हर परिस्थिति का सामना करने के लिए, ईश्वर की कृपा भी हमें तभी प्राप्त होगी जब स्वयं पुरुषार्थ करेंगे, और विश्वास रखेगें कि **''सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु''** सब दिशायें मेरी मित्र हैं, केवल यह कहने से कि 'ईश्वर हमें अभय कर दो'' हमें अभय मिलने वाला नहीं।

मनुष्य को अपनी कार्यक्षमता की उर्जा उसके स्वयं के विश्वास और दृढ़ संकल्प से मिलती है, जो व्यक्ति जितना अधिक निडर होकर कार्यकरता है, अधिक उत्साह व उमंग से भरपूर होकर कार्य करता है उतना ही वह कार्य कुशल और और कार्य क्षमता का धनी होता है, ईश्वर भी उनकी ही प्रार्थना सुनते है जो स्वयं पुरुषार्थी होते हैं दृढ़ संकल्पी होते है, मनुष्य के अपने विचार ही उसे अमृत देते हैं तथा अपने विचार ही विष देते है, अकारण भय से मुक्त वह स्वयं होकर सकल है यह विचार प्रबल करके कि ''जो होगा देखा जायेगा। ईश्वर मेरे साथ है।'' इसीलिए कहा गया है कि भय दु:ख का मूल है किन्तु पुरुषार्थ का आदिस्त्रोत भी है। भय से बचने के लिए ही बड़े-बड़े आविष्कार हुये है।

भय की मूलप्रवृति ईश्वर ने यू ही नहीं दी है, मानव जीवन के लिए यह एक अमूल्य निधि भी है, जिस तरह स्वस्थ जीवन के लिए नियमित व पौष्टिक आहार की आवश्यकता होती है उसी तरह समाज में रहने के लिए सामाजिक आर्थिक आध्यात्मिक उन्नति के भय की आवश्यकता होती है। क्योंकि बिना दण्ड के भय के हम झूठ बोलना, चोरी करना बड़ो का अनादार करना किसी के प्रति कटु व्यवहार व आलोचना करना, लोभ-लालच हत्या, बलात्कार जैसे कार्यों में संलग्न हो जायेगें और समाज में अनाचार फैल जायेगा। इन बातों से भयभीत रहेगे तो जीवन में शान्ति व सफलता भी मिलेगी। भय की औषधि है अभय बनकर रहना।

भय अविष्कार की जननी भी है, रोग के भय से आयुर्वेदका जन्म हुआ चिकित्सा के क्षेत्र में बड़ी-बड़ी खोज हुई। रोग निवारण के उपाय खोजे गये। शत्रुभय से एटमबम् की खोज की और अन्य हथियारों की भी। मृत्युमय से योग विद्या का जन्म हुआ।

स्वभाव में भय के स्थान पर अभय होकर रहना जीवन को उन्नत करता है, क्योंकि स्वभाव में कायरता व डरपोक होना, आलसी व अकर्मण्य होना के अवगुण है किन्तु सावधानी तथा सतर्कता एक गुण है यह भय का कारण नहीं।

सामाजिक नियमों का पालन करने के लिए यदि दण्ड का भय न हो तो चारो तरफ अराजकता फैल जायेगी, जिसकी लाठी उसकी भैंस का सिद्धान्त व्याप्त हो जायेगा हो जायेगा, मनुष्य को अपने कर्मो से भी भयभीत होना चाहिए, बुरा कर्म करनो का बुरा फल मिलेगा, अच्छे कर्मो का अच्छा फल, यह ईश्वर का न्याय है ईश्वर के न्याय में क्षमा का स्थान नहीं है, इसीलिए मन्त्रों में भयभीत होने की नहीं 'अभय' रहने की प्रार्थना का है। प्रार्थना करने से आत्मविश्वास बढ़ता है और पुरूषार्थ करने की क्षमता आती है। ईश्वर हमारा रक्षक है वह हमारा सखा है मित्र है पिता है। हमारे कर्मो का फल प्रदाता भी है। अत: जीवन में भयमुक्त रहे ईश्वर पर विश्वास रखें, मन्त्रों का सारांश है अभय बनकर रहो।

-2/25, आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर-हरिद्वार

मनुष्यता बनाम पशुता

- जगदीशचन्द्र शर्मा

परमात्मा की रची हुई इस सृष्टि में मनुष्य योनि को सर्वश्रेष्ठ कहा गया है क्योंकि यह अभय योनि है। मनुष्य का शरीर धारण करके जीवात्मा पिछले जन्मों में किये हुए कर्मो का प्रारब्ध रूप में फल भी भोगता है तथा वर्तमान में अपने स्वभाव के अनुसार नये कर्म भी करता है जिसके फल वर्तमान काल में अथवा पुनर्जन्म में अवश्य भोगने होंगे। विधि का ऐसा ही विधान है।

मनुष्य का शरीर पाकर भी यदि मनुष्य धर्म के अनुसार कर्म नहीं करता तो वह मनुष्य के रूप में पशु ही है। आचार्य चाणक्य ने कहा है-

(1) आहार निद्राभय मैथुनानि समानि
चैतानि नृणां पशुनाम्।
ज्ञानं नराणामधिको विशेषो ज्ञानेन
हीनाः पशुभि समानाः॥

अर्थात्-खाना सोना, डरना और सन्तान पैदा करन-मनुष्यों और पशुओं में ये चार बातें समान होती है। पशुओं की अपेक्षा मनुष्य में ज्ञान अधिक और विशेष होता है। ज्ञान से रहित मनुष्य पशुओं के समान ही है।

अपने अमर ग्रन्थ से सत्यार्थ प्रकाश में भी महर्षि दयानन्द ने मनुष्य की परिभाषा इस प्रकार की है:-

'मनुष्य' उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत अन्यो के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे।

इतना ही नहीं, किन्तु अपने सर्वसामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ निर्बल और गुणरहित क्यों न हों, उनकी रक्षा उन्नति प्रियाचरण, और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महाबलवान और गुणवान भी हो, तथापि उसका नाश अवनति और प्रियाचरण सदा किया करे। अर्थात जहाँ तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल ही हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारूण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भलें ही जावें, परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म पृथक कभी न होवे।''

महर्षि दयानन्द से प्रेरणा लेकर कितने ही स्वदेश भक्त स्वतन्त्रता संग्राम में शस्त्र लेकर कूद पड़े थे। ब्रिटिश राज की तुलना में वे कहीं भी नहीं ठहरते थे फिर भी कर्तव्यपथ पर अडिग चलते रहे। पं. रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्र-शेखर आजाद और सरदार भगतसिंह जैसे अनगणित क्रान्तिकारियों ने देश को स्वतन्त्र कराने के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया था। उन्हीं देशभक्तों की कृपा और बलिदान से आज देश के नागरिक आनन्द पूर्वक स्वतन्त्र राष्ट्र में सुख का सांस ले रहे हैं। अधिकारों की मांग कर रहे हैं। जबकि अंग्रेजी राज में बेगार ढोते रहे थे। हां ब्रिटिश राज की तुलना में अपराधों में बढ़ोतरी, भ्रष्टाचार, स्वच्छन्दता, जातिवाद, सम्प्रदायंवाद और पक्षपात अधिक बढ़ गया है जिससे देश की अखण्डता और हिन्दू समाज में विघटन शुरु हो गया है जो खतरे की घंटी है। वोट बैंक ने सभी प्रकार की देश भक्ति ओर नैतिकता पर पानी फेर दिया है। अहंकार और स्वार्थ प्रबल हो गये हैं।

धर्माचरण को ही जीवन का लक्ष्य मानते हुए महाराज भर्तृहरि ने अपने नीतिशतक में कहा है कि-

(2) निन्दन्तु नीतिनिपुण यदि वा स्तुबन्तु,
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्याख्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

अर्थात् नीति में निपुण मनुष्य चाहे निन्दा करें या स्तुति करें, लक्ष्मी आये या चली जाय, मृत्यु आज ही हो अथवा वर्षो बाद, परन्तु धीरजवान पुरुष धर्म मार्ग से पीछे नहीं हठते।

मनुष्य को सदैव विचारकर ही कार्य करना चाहिए नीति-शास्त्र ऐसा ही उपदेश देता है-

(3) गुणवद गुणवद्वा कुर्वतां कार्यमादौ,
परिणातिखधार्या यत्नतः पण्डितेन।
अरिभसकृतानां कर्मणामविपत्तेर्भवति
हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः॥

अर्थात् बुद्धिमान मनुष्य को चाहिए कि अच्छा

या बुरा कोई कार्य करने से पहले उसके परिणाम पर विचार करे क्योंकि बिना विचारे शीघ्रता से किये हुए बुरे कार्यो का निकृष्ट फल जीवन भर हृदय को जलाता और काँटे की भांति चुभता रहता है।

मनुष्य को सदा इस बात को स्मरण रखना चाहिए कि किये हुए अच्छे-बुरे कर्मो का फल अवश्य भोगना पड़ता है इसे कोई नहीं रोक सकता।

(4) नैवाकृतिः फलति नैव कुलं न शीलं,
विद्याऽपि नैव न च यत्नकृताडपि सेवा।
भाग्यानि पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि,
कालेफलन्ति पुरुषस्य यथैव वृक्षाः॥

अर्थात् मनुष्य को न तो सुन्दर रूप फल देता ाहै न उत्तम कुल-गोत्र, न शील न विद्या और न यत्नपूर्वक की गई सेवा-शुश्रुषा ही कोई प्रदान करती है। केवल पूर्वजन्म कृततप के द्वारा सञ्चित कर्म ही समय पर वृक्ष की भांति फल देते हैं। धर्माचरण ही कल्याण का मार्ग है-

(5) प्राणाधातान्निवृत्तिः परधनहरणे संयमः सत्यवाक्यं,
काले शक्त्या प्रदानं युवतिजन कथा मूक भावः परेषाम्।
तृष्णास्त्रोतो विभङ्गों गुरूषु च विनयः सर्वभूतानुकम्पा,
सामान्यं सर्वशास्त्रेष्वनुपहत विधिः श्रेयसामेष पन्थाः॥

अर्थात् जीवों की हिंसा न करना, पराये धन को न हरना, सत्य बोलना, पर्वकाल में अपनी शक्ति के अनुसार सुपात्रों को दान देना, युवतियों की कथा में मौन रहना, लोभ-लालच के विचार को त्याग देना, गुरुजनों के प्रति नम्रता दिखाना सभी जीवों पर दयाभाव रखना, सभी शास्त्रों में इस व्यवहार को जन-साधारण के लिए कल्याण का मार्ग बताया गया है। सत्पुरुषों का यही लक्षण है। इसके विपरीत निम्नलिखित लक्षण दुर्जनों के हैं-

(6) अकरूणत्वमकारणविग्रह,
परधने परयोषिति च स्पृहा।
सुजन बन्धु जनेष्वसहिष्णुता,
प्रकृतिसिद्धमिदं हि दुरात्मनाम्॥

अर्थात्-करूणाहीनता, बिना कारण लड़ाई झगड़ा करना, दूसरे के धन और स्त्री के पाने की इच्छा करना, सज्जनों और सगे-सम्बन्धियों के साथ ईर्ष्या रखना-ये लक्षण दुर्जनों में स्वभाव से ही पाये जाते हैं।-

दुर्जनों का पड़ोस भी दु:खदायक है यथा-

(7) उद्‌भासिताखिलखलस्य विश्वऽलस्य
प्राग्जात विस्तृतनिजाधम कर्मवृत्तेः
दैवाद् अवाप्तविभवसरू गुणद्विषोऽस्य,
नीचस्य गोचरगतेः सुखमाप्यते कैः

अर्थात्-जिसकी दुष्टता का ज्ञान सभी को हो गया हो, जिसके पूर्वजन्म के नीच कर्म इस जन्म में प्रकट हो रहे हों, जो भाग्य से धनवान भी बन गया हो, और जिसे श्रेष्ठ गुणों से द्वेष हो, ऐसे दुष्ट मनुष्य के सामने जाकर कौन सुख प्राप्त कर सकता है अर्थात् कोई भी नहीं। इसीलिए ज्ञानी पुरुष कहते हैं कि-

(8) वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह।
न मूर्खजन सम्पर्कः सुरेन्द्र भवनेष्वपि॥

अर्थात्-निर्जन पर्वतों पर वनचरों के साथ विचरण करना अच्छा है, परन्तु मूर्खो के साथ इन्द्र के भवन में रहना भी ठीक नहीं है। अज्ञानी मूर्खो के साथ इन्द्र के भवन में रहना भी ठीक नहीं है।

(9) येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणों न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुविभारभूता मनुष्य
रूपेण मृगाश्चरन्ति॥

अर्थात्-जिनमें विद्या, तप, दान, ज्ञान, शील और गुण का अभाव है, वे मृत्युलोक में पृथिवी पर भाररूप होकर मनुष्य रूप में मृग के समान विचरण करते हैं।

वेद और उपनिषद मनुष्य को सावधान करते है और उपदेश देते है कि-

(10) ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च
जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्त्येन भुञ्जीथा मागृधः
कस्य स्विद्धनम्।ईश.

अर्थात्-यह जो कुछ स्थावर-जंगम संसार है वह सब ईश्वर के द्वारा आच्छादनीय है अर्थात् ईश्वर इसके कण-कण में व्याप्त है इसलिए इसका त्यागपूर्वक भोग कर दूसरे के धन की इच्छा न कर।

-वैदिक धर्म प्रचारक, वेदान्त नगर, बहादुरगढ़

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्री विक्रमसिंह जी ठाकुर, दिल्ली
2. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
3. चौ नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
4. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
5. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
6. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
7. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
8. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
9. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
10. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
11. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेश्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओमप्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
42. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
43. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
44. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
45. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
46. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
47. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
48. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
49. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
50. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
51. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
52. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
53. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
54. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
55. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
56. यज्ञ समिति झज्जर
57. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
58. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
59. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
60. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
61. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
62. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
63. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
64. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
65. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
66. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
67. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
68. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
69. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी. एल.एफ-2, गुड़गांव
70. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
71. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
72. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
73. श्री डॉ. सुरजमल जी दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़
74. श्री कर्नल रविन्द्र कुमार जी चड्डा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली
75. श्रीमती रीटा चड्डा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली
76. श्री राज सिंह दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़

52वें वार्षिकोत्सव के प्रमुख यजमान

52वें वार्षिकोत्सव के प्रमुख यजमान

52वें वार्षिकोत्सव के प्रमुख यजमान

52वें वार्षिकोत्सव पर सम्मानित महानुभाव

52वें वार्षिकोत्सव पर सम्मानित महानुभाव

मानव जीवन में संस्कारों का महत्त्व

-सुशील वर्मा

जन्म से पूर्व हम संस्कारो के बारे में चर्चा कर चुके हैं। ज्यूं ही बालक जन्म लेता है हमारा यह दायित्व बन जाता है कि जिस सन्तान को हमने सुसंस्कृत बनाने का संकल्प लिया है उसका लालन पालन उसी प्रक्रिया से गुजरे जिसके प्रति हम प्रतिबन्धित हैं।

बालक के जन्म लेने से पहले तीन और जन्म पश्चात एक वर्ष पर्यन्त चार संस्कार और किए जाते हैं। इस प्रकार एक वर्ष की आयु तक उसके सात संस्कार हो चुके होते हैं। उस तीव्र गति से संस्कारित करने का एक मात्र उद्देश्य यह है कि वह बालक बाहिर के सांसारिक वातावरण के दुष्प्रभावो से बचा रहे।

जातकर्म संस्कार अर्थात् जन्म लेते ही किए जाने वाले कर्म एवं संस्कार। कर्मो में मुख्यत: मुख आदि साफ करना, स्नान करवाना। सुवर्ण शलाका से घी एवं मधु चटाया जाता है। घी से बुद्धि बढ़ती है। जठराग्नि, बल एवं आयु के लिए हितकर है। वहीं मघु बलदायक, रंग रूप को निखारने वाला व घावों को भरने वाला होता है। परन्तु मघु एवं घी समभाग में नहीं होना चाहिए। घी यदि एक भाग ले तो शहद तीन गुणा होना चाहिए।

संस्कार करते समय सुवर्ण शलाका से जीभ पर "**ओ३म्**" लिखा जाता है अर्थात् अध्यात्म की तरफ पहला कदम इसके अतिरिक्त बालक के कान में पिता द्वारा यह वचन बोला जाता है "**वेदोऽसि**" अर्थात् तू ज्ञान वाला है, अज्ञानी नहीं। जिस संस्कृति में बालक के जन्म लेते ही कान में मन्त्र फूँक दिया जाता है कि तूँ ज्ञानी है, अज्ञानी नहीं। वहां अनपढ़ता कहां रह सकती है क्योंकि पिता सबके सामने उसे ज्ञानी बनाने का दायित्व लेता है।

नामकरण संस्कार: संस्कारों की श्रृंखला में यह पांचवा संस्कार है। विश्व के हर कोने में प्रत्यक्ष यां अप्रत्यक्ष रूप में वैदिक या अवैदिक रीति से अथवा अन्य किसी रूप में यह संस्कार मनाया जाता है क्योंकि बालक को सम्बोधन करने के लिए नाम की तो आवश्यकता होती ही है।

श्री हरिशरण सिद्धान्तालंकार जी लिखते है कि "जो हम मन में सोचते है वही वाणी द्वारा शब्द से बोलते हैं और जो शब्द से बोलते हैं वहीं कर्म से करते है। ऐसे ही विचार Emerson के हैं जो कहते हैं "Word are also actions and actions are a kind of words" हम बालक को नाम देते है वस्तुत: वह शब्द ही होता है जो सारी आयु उसके लिए प्रयोग किए जाने वाला है उस नाम के आधार पर ही हम उसे वैसा बनने की प्रेरणा देते हैं। नहीं तो वही होगा "आँख के अन्धे नाम नयनसुख"। यह नाम ही तो है जो बच्चों के प्रति हमारी आकाक्षाओं को प्रतिबिम्बित करता है।

इसी संस्कार में यज्ञ करते समय बालक का सिर उत्तर में और पांव दक्षिण में रख गोद में लिया जाता है कारण कि सिर उत्तर में अर्थात् बालक उत्कृष्ठ ज्ञान सम्पन्न हो और पांव दक्षिण में ताकि बालक वामपन्थी न हो, वक्र अथवा कुटिल न हो। उच्च विचारों के प्रतिपादन के लिए ही ऐसे संस्कार सहायक होते हैं। नाम सार्थक हो और बालक के हृदय में उच्च भावना जागृत्त करने वाला हो।

"**कोऽसि कतमोऽसि कस्यासि कोनामासि -सुपोषं पोषैः**" मन्त्र बोलकर बालक का नाम रख के सुखस्वरूप अमरणधर्मा होने का उपदेश दिया जाता है और उसके दीघार्यु होने की कामना की जाती है।

छठा एवं सातवां संस्कार निष्क्रमण एवं अन्नप्राशन संस्कार है। वैसे तो यह छोटे छोटे संस्कार हैं परन्तु इनका महत्त्व भी कम नहीं है। बालक का बाह्य दुनियाँ से सम्बन्ध स्थापित करना और अन्न खिलाने के लिए ये संस्कार हम उत्सव के रूप में मनाते हैं।

बालक की शारीरिक एवं मानसिक उन्नति के लिए वायु एवं प्रकाश अति आवश्यक है इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए निष्क्रमण संस्कार है। ताजी ठंडी हवा और सूर्य की प्राणदायी किरणों का सेवन बालक को जहां विटामिन 'डी' प्रदान करता है वही प्राकृतिक शीत एवं प्राणदायक वायु उसमें नव रक्त का संचार करती है। "**सूर्य आत्मा जगतस्यतस्थुषश्च**" सूर्य जो

जड एवं चेतन जगत की आत्मा अर्थात् जीवन है। बालक को सूर्य दर्शन कराने के बाद रात्रि में चन्द्र दर्शन कराया जाता है माता अञ्जलि में जल लेकर पृथ्वी पर छोड़ देती है अर्थात् चन्द्र जनित मानसिक विकारों को नीचे धकेलना।

बालक की शरीर की वृद्धि के लिए अन्न की आवश्यकता होती है इस प्रक्रिया के लिए अन्नप्राशन संस्कार का आयोजन किया जाता है। द्रव्य भोजन से स्थूल भोजन पर आना एक वैज्ञानिक ढंग से हो। वास्तव में अन्नप्राशन और दाँत निकलने का समय का एक दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध है। हल्का अन्न तो बालक को दिया ही जाता है इसके साथ ही मन्त्रों से प्रार्थना की जाती है कि इसके पास अन्न का इतना भण्डार हो कि वह दूसरों को दे सके और अन्न का स्वामी बनें। यही तो संस्कार है जो बच्चे में समाज के प्रति कर्तव्य की भावना पैदा करता है।

एक वर्ष की आयु उपरान्त गुरुकुल (विद्यालय) में प्रवेश से पहले मुण्डन संस्कार और कर्णवेध संस्कार करा उसे गुरु (अध्यापक) को द्विज बनाने के लिए सौंप दिया जाता है। मुण्डन संस्कार जिसे चूड़ाकर्म, केशवपन और क्षौर आदि नामों से जाना जाता है, यह पहले अथवा तीसरे वर्ष में किया जाता है। इस संस्कार का दान्तों के निकलने से बहुत नजदीक का सम्बन्ध है।

बालक के दूध के 20 दाँत होते हैं जिनमें से एक वर्ष की आयु तक चार ऊपर के और चार नीचे के दाँत निकल आते हैं। अढ़ाई अथवा तीन वर्ष तक बाकी दाँत निकल कर संख्या 20 हो जाती है। प्रकृति ने पहले आठ दान्त निकलने के बाद आगे के दान्त निकलने में व्यवधान डाल दिया ताकि बालक को लगातार कष्ट न हो। इसी लिए यह संस्कार पहले अथवा तीसरे साल में करने का विधान है। सिर दर्द होना अथवा भारा होना, लार निकलना दस्त लगना आदि परेशानियां बहुत तकलीफ देह होती है क्योंकि बालक के बाल गर्भ में मलिन जल में रहते हैं इसलिए इनका मुण्डन आवश्यक है। फफूंदी, खुजली आदि रोगों से छुटकारा, सिर के भारी होने से सुरक्षा और नए बाल आने में सहायक होना। इस संस्कार का मुख्य उद्देश्य है।

मुण्डन का अर्थ होता है मस्तिष्क को साफ कर देना। प्राचीन समय में केशों का मुण्डन एक तरह से अविद्या के मुण्डन का प्रतीक था। ब्रह्मचर्य आश्रम प्रवेश करते ही ब्रह्मचारी को प्रवेश करते समय भी सिर का मुण्डन आवश्यक माना जाता था। यह संस्कार मुसलमानों में भी ''हकीमा'' नाम से किया जाता है।

इसी श्रृंखला में कर्णवेघ नवम संस्कार है। कात्यायन ग्राह्य सूत्र के अनुसार यह संस्कार तीसरे अथवा पांचवे वर्ष में करना चाहिए। सुश्रुत कहते हैं कि कर्ण वेघ से बालक की रक्षा होती है। यह रक्षा कैसे हो पाती है? बहुत से लोगों का मत है कि कान के छेद का पेटकी आन्तों से सम्बन्ध है। कर्ण वेध से हर्निया बीमारी नहीं होती। यह वैज्ञानिक विधियां जिन्हें हम प्रायः भुला चुके हैं, उनके द्वारा शरीर को स्वस्थ रखा जाता है और साथ ही मानसिक एवं अध्यात्मिक स्तर पर बालक का पथ प्रदर्शन किया जाता है। आज हमारे युवा फैशन के कारण पाश्चात्य की नकल कर एक कान का छेदन करवाते हैं और यदि यही संस्कार के रूप में बालक के कानों का छेदन कराएं तो उसे फूहड समझा जाता है। हमारी यह सांस्कृतिक परम्परा पीछे छूट गई है और हम पाश्चात्य देशों की गुलामी का भार आज भी बड़ी शान से बखूबी ढोए जा रहे हैं।

बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण इसी आयु में किया जाना चाहिए नहीं तो आज इनके उपेक्षित होने के प्रमाण हमारे सामने है। हमारी उच्च कोटि की परम्पराओं को तो हम छोड़ रहे हैं और जिन्हें संस्कारों का महत्व पता ही नहीं उनका हम अनुसरण कर रहे हैं। बालक को द्विज बनाने के बारे में परिचर्चा अगले अंक में।

-M.Sc (Hons.) M.A. Ved (Part-II)
गली मास्टर मूल, चन्द वर्मा, फाजिलका-152123

जीवन बहुमूल्य है इसका विवेक पूर्वक उपयोग ही मानव मात्र के लिए हितकारी है। अन्यथा यह कम भयावह नहीं।

लहसुन बचाता है इन्फेक्शंस से और सेब बुढ़ापा से

देसी नुस्खों के असर होने या ना होने के लिए अनेक कारक हैं, जिनमें से सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों की प्योरिटी है। हल्दी पाउडर यदि मिलावट के बिना है,तो निश्चित ही फायदेमंद होगा, लेकिन किसी भी तरह की मिलावट होने पर हेल्थ को कई सारे नुकसान हो सकते हैं। हर 20 किलोमीटर के दायरे के बाद पौधों के आंतरिक गुणों में फर्क नजर आने लगता है। जमीन के न्यूट्रिएंट्स, इसकी क्वालिटी, वहां की जलवायु, पानी और पर्यावरण सब कुछ बदल जाता है। ऐसे में अक्सर पौधों के अंतर्गुणों में भी फर्क देखा जा सकता है और इसका सीधा असर फॉर्मूलों के असर पर देखा जा सकता हैं इस ज्ञान को खुली आंख से देखना और अपनाना जरूरी है, न कि इसकी आलोचना करना।

चलिए आज जानते हैं 2 खास चीजों के बारे में जो सेहत को दुरूस्त बनाने में जिनके औषधीय गुणों को आधुनिक विज्ञान भी मानता है।

इस लेख में जिक्र किए गए किसी भी औषधीय गुण को आधुनिक औषधि विज्ञान ने तमाम शोधों के जरिए प्रमाणित किया है और लेख को आपके समक्ष लाने का उद्देश्य भी यही है।

लहसुन- आजकल बैक्टीरिया, वायरस और फफूंद से होने वाले इन्फेक्शंस इतने बढ़ चुके हैं कि अधिकांश एंटीबायोटिक्स का इन पर कोई असर नहीं होता है। हमारी रसोई में उपयोग में आने वाले अधिकांश मसाले किसी दवा से कम नहीं। लहसुन एक ऐसी ही वनस्पति है जिसके एंटीबायोटिक गुणों की वजह से इसे सबसे महत्वपूर्ण जीवनदायी बूटी के तौर पर जाना जाता है। लहसुन की जबरदस्त ताकत का एक उदाहरण MDR-TB (मल्टी ड्रग रेसिसटेंट ट्युबरकुलोसिस) जैसी बीमारी ठीक कर देना है। 'सफेद प्लेग'के नाम से प्रचलित इस रोग के लिए अनेक एंटीबायोटिक्स बाजार में लाए गए, लेकिन लहसुन सबसे ज्यादा असरदार रहा जिससे रोग जड़ से खत्म हो गया। टी.बी के अनेक स्ट्रेन्स को ठीक करने के लिए लहसुन फायदेमंद माना गया है। एक नहीं बल्कि कई प्रकार की बीमारियों को दूर करने में लहसुन सबसे कारगर माना जाता है। हर्पिस, पैरा इन्फ्लुएंजा, मुंह के इन्फेक्शन, हेलिकोबैक्टर, क्लोस्ट्रिडियम, हैजा और पेचिस जैसे इन्फेक्शंस को कंट्रोल करने के लिए आज भी लहसुन सबसे सटीक उपाय है।

सेब- अंग्रेजी की एक कहावत के अनुसार रोजाना एक सेब का सेवन कई तरह की हेल्थ प्रॉब्लम से दूर रखता है। बात को साबित किया है कि सेब को खाकर कई प्रकार के रोगों से दूर रहा जा सकता है। कोलोरेक्टल कैंसर के निदान के लिए तो जैसे सेब एक वरदान है। जितने सेब आप खाएंगे, उतना ही इस कैंसर से दूर रहेंगे।

माना जाता है कि सेब के नियमित सेवन से यंग भी बने रहते हैं और असमय बुढ़ापे की समस्या को भी रोका जा सकता है। सेब को खाने से कई प्रकार की एलर्जी दूर होती हैं। बालों का लगातार झड़ना, दस्त की समस्या या कैंसर रोग में रेडिएशन के बाद होने वाली कमजोरी, सेब इन सभी के इलाज के लिए बहुत ही फायदेमंद होता है। लिवर कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियों के इलाज में भी सेब एक दवा के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है।

अनमोल मोती

1. यदि हर कार्य यह समझ कर किया जाए कि भगवान मेरा साथी है तो असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाता है।
2. एकाग्रता से ही सम्पूर्ण आनन्द प्राप्त हो सकता है।
3. समस्या स्वरूप नहीं समाधान स्वरूप बनो और बनाओ।
4. यदि आप हिम्मत का पहला कदम आगे बढ़ाएंगे तो परमात्मा की सम्पूर्ण मदद मिल जाएगी।
5. परमात्मा में दृढ़ विश्वास का अर्थ है-निर्भयता।
6. चेहरे की मुस्कराहट और वाणी की मिठास बड़ो-बड़ो को मुग्ध कर देती है।

महान बनो

-नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

मनुष्य अपने जीवन में महान कैसे बन सकता है इस यक्ष प्रश्न का उत्तर हमें वेद ज्ञान से मिलता है। ऋग्वेद का मन्त्र **''अयमुष्य सुमहाँ अवेदि सुमहान** वही है जो 1.होता 2. मन्द्र: 3. मनुष:, 4. यह्व:, 5. अग्नि: इन गुणों से परिपूर्ण है। इन गुणों की चर्चा से पूर्व हमें महानता के सामन्य अर्थ और कसौटी को समझना होगा।

सामान्य तौर पर बड़े होने को महान होना समझ लिया जाता है। अंग्रेजी में दोनों को समानार्थक माना गया है और ग्रेट का अर्थ बड़े और महान दोनों से किया जाता है। भाषाओं की जननी और विश्व की सबसे प्राचीन समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा संस्कृत और उसके निकटतम उसी देवनागरी लिपि से बनी हमारी मातृभाषा हिन्दी इस अंग्रेजी से कहीं अधिक व्यापक समृद्ध होने के कारण इस बड़े और महान होने के अन्तर को स्पष्ट कर देती है। वेद की दृष्टि में तो ना कोई बड़ा है ना कोई छोटा। धन ऐश्वर्य से बड़ा होने पर कोई महान नहीं हो सकता। महानता की कसौटी पर समय और समाज मनुष्य को कसता है। कोई भी व्यक्ति यदि स्वयं को खुद ही स्वयंभु बनकर महान घोषित कर देता है तो वह महान नहीं कहलाता अपितु वह तो आत्म मुग्धता से ग्रस्त एक अहंकारी मात्र है और अहंकार या अभिमान एक ऐसा अवगुण है जो किसी गुण से पैदा होता है और फिर सबसे पहले उसी गुण को खा जाता है। जैसे ज्ञान का अभिमान ही सबसे बड़ी अज्ञानता है। अर्थात् वही मनुष्य महान है जिसे समय और समाज महान कहे ना कि वह जो खुद को महान घोषित कर दे।

आइये अब महानता के पाँचों लक्षणों पर चर्चा करते हैं। प्रथम लक्षण है होता जिसका अर्थ है वह याज्ञिक जो अग्निष्ठ होकर ज्योति वा प्रकाश का प्रादुर्भाव करता है। होता एक कर्म कुशल कर्मयोगी होता है और प्रत्येक संस्था में होता के होने से ही सब कुछ होता है और नहीं होने से कुछ नहीं होता। यज्ञ अर्थात् श्रेष्ठतम कर्म करते हुए समय की आवश्यकताओं के अनुसार दिव्यताओं का सृजन सत्कार संगतिकरण करता हुआ जब सर्वस्व समर्पित कर देता है तब वह होता के रूप में जाना जाता है। होता केवल आहवाता यानी आह्वान करने वाला ही नहीं अपितु वह परमपिता परमेश्वर को अंगीकार करने वाला आदाता और समाज राष्ट्र, विश्व के हित के लिए सर्वस्व दान करने वाला दाता भी होता है।

सुमहानता दूसरा लक्षण मन्द्र: अर्थात् आनन्दवृत्ति वाला होना। आनन्द और सुख में अन्तर है, आनन्द आत्मा का भोजन है जबकि सुख मनुष्य की मन स्थिति पर निर्भर करता है। स्थिति अनुकूल होने पर सुख और प्रतिकूल होने पर दु:ख होता है। जबकि आनन्द में मनुष्य का आत्मा आनन्द स्वरूप परमपिता परमेश्वर के आनन्द में निमग्न होकर नर्तन करने लगता है। इसे ही उपासना भी कहते हैं। आनन्द की स्थिति में साधक साधना करते हुए साधय देव ईश्वर को समर्पित होकर एकरूप हो जाता है। सामान्य अर्थ में जो मनुष्य अपने को सौंपे गए नियत कार्य में पूरी रूचि लेकर उसमें होकर जय-पराजय के भाव से मुक्त स्थितप्रज्ञ होकर प्रसन्नतापूर्वक कुशलता से उस कार्य को करता है वही आनन्द वृति वाला होता है।

महानता का तीसरा लक्षण है मनुष: अर्थात् मनुष्यता। वेद भगवान ने मनुर्भव कहकर हमें मनुष्य बनने का आदेश दिया। इससे स्पष्ट है कि मानव योनि में जन्म लेने के उपरांत भी मनुष्योचित गुणों को धारण करके ही हम मनुष्य बन सकते हैं। क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने मनुष्य को परिभाषित करते हुए आर्योद्देश्यरत्नमाला में लिखा ''मनुष्य वह जो मननशील, विचारवान हो, सभी से स्वआत्मवत यथायोग्य व्यवहार करता हुआ निर्बल धर्मात्माओं का संरक्षण और दुष्टों को दंड देकर परोपकार के कार्य किया करे।'' अब हमें आत्मविवेचन करते हुए खुद को इस कसौटी पर कसना है कि क्या हम मनुष्य कहलाने के अधिकारी हैं या फिर **'मनुष्य रूपेण मृगाश्चरंति'** हम मनुष्य के रूप में पशु बनकर फिर रहे हैं। मनुष्यता हम मनुष्यों का धर्म है यदि हम अपने धर्म एवम् मनुष्यता की रक्षा करेंगे तो निश्चित रूप से रक्षित धर्म हमारी

रक्षा करेगा और यदि हम अपने धर्म एवम् मनुष्यता को मार देंगे तो यही मरा हुआ हमारा धर्म हमें मार देगा। यदि हम महान बनना चाहते हैं तो पहले हमें मनुष्य बनना होगा।

सुमहानता का चौथा लक्षण है यह्व: अर्थात् पवित्र विचार और विशाल हृदयता लिए महानता। इसीलिए ब्रह्मयज्ञ में साधक प्रार्थना करता है **''ओं भू: पुनातु शिरसि'' और ''ओं महः पुनातु हृदये''।** वस्तुत: महान वही है जिसके विचार महान हों, दिल महान हो और कर्म महान हों।

महानता का पांचवा लक्षण है अग्नि: अर्थात् अग्निस्वरूप परमेश्वर की ज्योति से ज्योतिर्मय अन्तरात्मा। महान वही है जिसके अन्दर आग है, प्रकाश है, ताप है, उत्साह है और जो स्वयं रोशन है, वही दूसरों को रोशनी दे सकता है। मनुष्य का आत्मा सत्य का आग्रही है और सर्वान्तर्यामी परमेश्वर सत्यस्वरूप सर्वज्ञ हमारी आत्मा में विराजमान हमारे सच्चे मित्र होकर सदैव हमें सत्य धर्म मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। महान बनने के लिए आवश्यक है हम अग्निस्वरूप अन्तर्यामी ईश्वर से स्वयं प्रकाशित हों और आत्मा में उद्बुध अग्नि में यश अपयश की चिन्ता किए बिना आनन्दमय होकर सद्कर्मों की आहुति देते हुए सच्चे होता बनें तभी हम महान बन सकते हैं।

- 602 जी.एच.53, सैक्टर-20, पंचकूला,
मो 09467608686

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर– दिल्ली से बाहर''। रेल-बस एवं मेट्रो आदि की सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

–व्यवस्थापक, चलभाष: 9416054195

हंसो और हंसाओ

- रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

- **अध्यापक छात्र से**-यदि तीसरा विश्वयुद्ध हुआ तो उसका क्या परिणाम होगा?
  छात्र-सर हमारी इतिहास की किताब में एक पाठ और बढ़ जायेगा।
- **दो बच्चे** आपस में गप्पे हांक रहे थे।
  एक लड़का बोला-मैंने एक पहाड़ पर इतनी सर्दी देखी कि शब्द मुंह से बर्फ बनकर निकलते थे और उन्हें उठाकर गैस पर गर्म करने पर हम बात सुनते थे।
  दूसरा-हाँ यार दुनिया का बुरा हाल है मैं ऐसे शहर में गया जहाँ इतनी गर्मी पड़ती है वहां लोग मूर्गियों को बर्फ खिलाते है कही अंडे पेट में ही ना उबल जायें।
- **पत्नी पति से**-तुम कोई बात नहीं सुनते एक कान से सुनते हो दूसरे से निकाल देते हो।
  पति-और तुम दोनों कानों से सुनती हो और उसे मूंह से निकालती हो।
- **बच्चा**-क्या आपके पास खटमल मारने की दवा है?
  दुकानदार-हां है।
  बच्चा-तब ठीक है, मैं घर से सारे खटमल लेकर आता हूँ।
- शादी के तीसरे दिन **पत्नी** ने अपने निखट्टू **पति** से मन की इच्छा जाहिर की मैंने बी.ए. पास किया है अगर नौकरी करूं तो आपको एतराज होगा?
  पति-तुम भी कमाल करती हो इसी उम्मीद पर तो मैंने तुमसे शादी की है।

आपसे अनुरोध है कि आप अपने अप्रकाशित प्रेरणादायक लेख तथा कविता टाईप की हुई सामग्री आप ईमेल **atamsudhi@gmail.com** पर भिजवा सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा। **–विक्रमदेव शास्त्री**

कलंक की कहानी कहता मृत्युभोज

- श्रीमती ममता जांगिड

मृत्युभोज करना, कराना एवं इसका समर्थन करना और अप्रत्यक्ष रूप से इसमें सहयोग करना घोर निंदनीय और पाप कर्म है।

क्या आप फिर भी इस पाप के भागीदार बनेंगे?

कुछ लोगों का मूर्खतापूर्ण तर्क है कि दिवंगत को मिलेगा, उसे ऊपर शान्ति मिलेगी, उसने सारी उम्र कमाया-वगैरह-वगैरह। मेरा उनसे एक प्रश्न है कि क्या फिर गीता का कर्मयोग झूठा है? जिसके अनुसार मनुष्य को उसके कर्मो का फल मिलता है। मगर आपके कथानुसार उसको ऊपर मिलेगा, यानी आप अपने जीवन में चाहे जितने उल्टे-पुल्टे कार्य करो कोई नहीं रोकेगा। बस मरने पर उसके पीछे मृत्युभोज कर दो सब ठीक हो जाएगा। क्या ये प्रकृति के विरूद्ध तर्क नहीं है? थोड़ा गहराई से सोचना इस विषय पर। हां, सामाजिक मर्यादाओं के मद्देनजर एक गोष्ठी रूप में दिवंगत को सच्चे मन से श्रद्धांजलि देने में कोई बुराई नहीं। इसके अन्तर्गत दिवंगत के परिवार को मानसिक सम्बल देना, उन्हें सान्तवना देना सामाजिक मूल्यों में शामिल है, लेकिन मृत्यु भोज करना या कराना किसी भी शास्त्र में नहीं लिखा है।

दूसरा बेहूदा तर्क है उसे ऊपर शांति मिलेगी। वर्तमान में हम 21वीं सदी में जी रहे हैं, न कि आदिम युग में। आज मानव ने सारे ग्रहों को छान मारे हैं। किसी भी ग्रह पर कोई जीवन पृथ्वी के अलावा नहीं मिला। सिर्फ मंगल ग्रह पर जीवन को स्थापित किया जा सकता है। फिर ऊपर कौन है? जिसको मिलेगा? चलो मिलेगा। तो फिर सनातन धर्म का शास्वत नियम जिसके अनुसार समस्त मानव जाति पुनर्जन्म में विश्वास रखती है। क्या वे झूठ है? अगर किसी को कुछ और कहीं मिलेगा तो वो है उसके स्वयं के निज कर्मो का फल, फिर हम किसको और क्यूं बहला रहे हैं?

तीसरा मूर्खतापूर्ण और अमानवीय तर्क की उसने सारी उम्र कमाया। इसलिए उसके पीछे कुछ तो करना चाहिए। तो क्या मानव मलूक दास जी के कहे अनुसार चले कि "अजगर करे ना चाकरी, पंछी करे ना काम। दास मलूका कह गए सबके दाता राम।" फिर तो सम्पूर्ण सृष्टि में अराजकता का माहौल बन जाएगा। कर्म हमारे भाग्य का निर्धारण करता है। अच्छे कर्म अच्छे भाग्य का तो, बुरे कर्म बुरे भाग्य का। मनुष्य जन्म लिया है तो कर्म हमारा प्रधान गुण है। उससे तो निभाना ही पड़ेगा और कर्म के पथ पर आगे बढ़ते जीव कल्याण की कामना के साथ मनुष्य धर्म का पालन करना ही मनुष्यता का पुख्ता प्रमाण है और कर्म से मुंह मोड़ना मतलब आसुरी वृत्तियों को आमंत्रिण देना है, जिसमें न परिवार का, न समाज का और न ही राष्ट्र का भला हो सकता है। इसलिए हमें हमारे शास्त्र और धर्म अच्छे कर्मों को करने की सलाह एवं सीख देते हैं। जिसमें परिवार का अच्छे से पालन-पोषण, बच्चों की उचित शिक्षा, नवनिर्माण, सृजन, समाज कल्याण, धर्म और राष्ट्र की रक्षार्थ सजग रहते हुए अंशदान करना अच्छे कर्मों के लक्षण हैं। न कि जीवन भर धनोपार्जन में लगे रहे और अंत में उस धन का दुरूपयोग मृत्युभोज के रूप में करो। ये कहां कि समझदारी है? समझदारी तो तब होती जब आप उस धन को मानवकल्याण में, मूक पशु-पक्षियों की सेवा में, राष्ट्र निर्माण में, अस्पताल, विद्यालय, होस्टल, जलग्रह, नि:शुल्क भोजनालय, गौशाला, समाज ओर धर्म की रक्षा में खर्च करते तो आपका धन कमाना ओर उसे सही जगह पर खर्च करना सार्थक होता। जिसे सदियों तक याद रखा जाएगा। और मृत्युभोज में अपने धन का अनावश्यक व्यय आपको सिर्फ और सिर्फ निंदा का पात्र बनाएगा। जिसे आप आप करके अपनी भावी पीढ़ी को ओर इस दलदल में धंसने पर मजबूर कर रहे हो, ये पाप नहीं तो और क्या है? और इसमें समर्थन और सहयोग करना क्या उस पाप से कम हैं? एक पते की बात आज तक आपने सुना होगा फलां सेठ ने 21 या 51 जोड़ों की शादी करवाई या सामूहिक विवाह में उसने इतना योगदान दिया। विधवा विवाह करवाया, कन्या भ्रूण, हत्या रूकवाई, शराबबंदी करवाई, नशा मुक्ति अभियान चलाया। पशुओं को चारा डलवाया, पक्षियों को चुग्गा डलवायाये सब स्वर्ण अक्षरों में गौरवपूर्ण कहते हुए और इस कार्य को करते हुए देखा और सुना होगा। जो हमारे धर्म का मुख्य अंग है, लेकिन

क्या आपके कभी सुना है कि किसी न किसी और के माता-पिता के पीछे उसके परिवार के होते हुए या कोई परिवार में नहीं है तो उसके पीछे किसी ने मृत्युभोज किया या करवाया हो। न के बराबर सुना होगा। इसके पीछे कारण क्या है? कभी विचार किया आपने। यहां बात ऊपर मिलने या न मिलने की नहीं है, यहां अपनी नाक और प्रतिष्ठा का प्रश्न पैदा हो जाता है। ये कार्य कोई किसी को नहीं करने देगा। चाहे कोई कितना भी गरीब हो उसे ये कार्य स्वयं को ही करना होता है। चाहे बच्चों की पढ़ाई छूट जाए, चाहे परिवार कर्ज में डूब जाए। चाहे पुश्तैनी जमीनें बिक जाए। इसमें चारा नहीं, इसमें कोई भामाशाह नहीं। इसमें उस परिवार को स्वयं ही सब कुछ करना है। फिर ये अच्छा कैसे हो सकता है? ये सिर्फ अनचाही लम्बी नाक का प्रश्न है जिसे एक दिन कटना ही कटना है और ये मात्र नमक, मिर्च कम होने भर से कट जाए तो फिर ऐसा नाक को कब तक बचा कर रखोगे। इस नाक को बचाने के चक्कर में अपनों की जिंदगियां खराब तो नहीं कर रहे हो? ये एक ऐसी प्रतिस्पर्धा है जिसमें लगभग सभी हो हारना है। कुछ क्षण के लिए जीत भी गए तो आखिर पछतावे के अलावा कुछ हाथ नहीं लगेगा। आपकी इस अंधप्रतिस्पर्धा में समाज के आमजनों का भविष्य दांव पर लग जाता है और देखा-देखी में वे अपने परिवार को अनचाही मुसीबतों और गरीबी में धकेलते जा रहे हैं। बच्चों की जिंदगियां संवारने की बजाए उजाड़ते जा रहे हैं तो क्या भविष्य में भावी पीढ़ी हमसे प्रश्न नहीं करेगी? जरूर करेगी पर शायद सिवाय समर्पण के उत्तर हमारे पास नहीं होगा। इसलिए अपने बच्चों के सामने निरूत्तर होकर लज्जित होने से पहले सजग हो जाओ। भावी पीढ़ी को इस दलदल से बचाओ।

श्री तेजराम आर्य दिवंगत

श्री तेजराम आर्य जन्म 1937 गांव सिलाना (झज्जर) मृत्यु 29.08.2018। नजफगढ़ आगमन 1973

आर्य समाज नजफगढ़ के सदस्य 1975 से 2007 से जीवन पर्यन्त आर्य समाज नजफगढ़ के संरक्षक रहे। हमेशा आर्य समाज के लिए तन-मन-धन से तत्पर रहे व आर्य समाज में अच्छी प्रतिष्ठा पाई। इनके तीनों पुत्र अच्छे संस्कारी व सम्पन्न है। इनके बड़े पुत्र मास्टर सत्यवीर सिंह आर्य 2013-2017 तक आर्य समाज नजफगढ़ के प्रधान रहे।

महाशय तेजराम जी अपने पीछे भरा-पुरा परिवार छोड़ कर गए। परमपिता परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति दे और परिवार को दु:ख सहन करने की शक्ति देवें। ओम् शान्ति ओम्।

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं–

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मपुर रोड़, फर्रूखनगर, गुड़गांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

आर्यसमाज की दृष्टि में योगेश्वर कृष्ण

- कन्हैया लाल आर्य, उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

महान् नीतिज्ञ, शील की प्रतिमा, सदाचार की प्रतिमूर्ति, वेद-विद्या के सागर, आदर्श साम्राज्य निर्माता, शूर शिरोमणि, भारत-भावन श्रीकृष्ण जी के सम्बन्ध में आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में लिखते हैं-

''श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्तपुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण, श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त, बुरा काम, कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा।''

महाभारत में वर्णित श्रीकृष्ण पर हमें गर्व होना चाहिए। उन्होंने अति विकट परिस्थितियों में संघर्ष करके दिखाया, जिसकी कल्पना भी उसके पूर्व नहीं की गई थी। सत्य, न्याय, प्रेम, दया, करूणा, अहिंसा, धर्म, अध्यात्म से लेकर सम्पूर्ण सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षक कोई इस धरा पर हुआ तो वह योगेश्वर श्रीकृष्ण जी ही थे। ईश्वरभक्त विश्वगुरु योगेश्वर कृष्ण भारतीय संस्कृति के उज्जवलतम नक्षत्र हैं। इनके चरित्र की आभा मानव मन को किंकर्त्तव्यविमूढ़ता से उबारने में रामबाण औषधि है। योगेश्वर श्रीकृष्ण जी महाराज का जीवन ऋषियों, मुनियों एवं महाराज जनक जैसे महान् आर्य पुरुषों के सदृश था।

न केवल भारत के इतिहास में वरन् विश्व के इतिहास में ऐसा अद्‌भुत, विलक्षण और बहुआयामी व्यक्ति दुर्लभ है, जैसा योगीराज श्रीकृष्ण जी का है। श्रीकृष्ण जी भारतीय जनमानस के लिए अलौकिक, दिव्य एवंपूज्य महापुरुष हैं। उनका वास्तविक जीवन और चरित्र महर्षि वेदव्यास द्वारारचित ग्रन्थ महाभारत में मिलता है, जहाँ उन्हें अत्यन्त पवित्र, धर्मात्मा, योगीराजा, नीतिनिपुण, राष्ट्रनायक, अत्यन्त विनम्र, शास्त्रयज्ञ, सर्वप्रिय, निर्भीक वक्ता आदि विशेषणों से विभूषित किया गया है।

श्रीकृष्ण जी भारतीय संस्कृति में कर्म की प्रधानता का उपदेश देने वाले, कर्म के मूर्त्तरूप थे। न केवल भारतवर्ष बल्कि विश्व को कर्म का सन्देश देने वाले और गीता का ज्ञान देने वाले योगेश्वर श्रीकृष्ण जी करोड़ों की आस्था के प्रतीक हैं। श्रीकृष्ण जी की पहचान मात्र गीता या महाभारत से नहीं है बल्कि सारा युग ही उनका था। जब तक वे रहे, अन्याय, अत्याचार, हिंसा, द्वेष, पाखण्ड, अन्धविश्वास और अनाचार के पाँव जमने नहीं दिये। ऐसे महासंकल्पी, महानीतिज्ञ, युगसंस्थापक, युगनिर्माता के जन्मदिन (जन्माष्टमी) पर हम यह प्रतिज्ञा करें कि उस महामानव द्वारा स्थापित मूल्यों को जीवन में आत्मसात् कर अपने जीवन के साथ-साथ अपने समाज व राष्ट्र को उसी प्रकार से गौरवशाली बनायेंगे जैसे योगेश्वर का था।

कन्हैया लाल आर्य

श्रीकृष्ण जी के उदात्त, सात्विक और उज्जवल व्यक्तित्व को भागवत पुराण एवं लोक साहित्य में कामी, लम्पट, माखनचोर, गोपियों के साथ रासलीला करने वाला तथा उनके वस्त्र हरण करने वाला बताया गया है। योगेश्वर श्रीकृष्ण जी को, उनके दिव्य और गरिमामय चरित्र को विकृत एवं कालंकित करके उनके साथ, ऐसी मनगढ़न्त अश्लील लीलायें व बातें जोड़ दी गई हैं जिन्हें पढ़कर और सुनकर लज्जा से सिर झुक जाता है। वैदिक विद्वानों ने सदैव महाभारत के आधार पर श्रीकृष्ण के यथार्थ चरित्र को चित्रित किया है जो अत्युत्तम है।

पौराणिक जगत् को महर्षि दयानन्द के प्रति नतमस्तक होना चाहिए कि उन्होंने योगेश्वर श्रीकृष्ण जी के उस चरित्र को विश्वसमाज के सामने प्रस्तुत किया, जैसा कि उनका वास्तविक जीवन था, वरना श्रीमद्‌भागवत पुराण के रचयिता ने तो उनके जीवन चरित्र का इतना हनन कर दिया था कि विश्वसमाज उनके यथार्थ स्वरूप से वंचित हो गया था। उसी के कारण आज भी हमारे समाज का एक बहुत बड़ा भाग श्रीकृष्ण जी को ईश्वर का अवतार मानता है, परन्तु ऐसा नहीं है। वे न तो ईश्वर थे और न ही ईश्वर

के अवतार थे। यदि वे ईश्वर होते तो परमात्मा को आत्मा से भिन्न न मानते। गीता में 13वें अध्याय के 12वें श्लोक में उन्होंने स्वयं कहा है-

ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते।
अनादि मत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते॥

अर्थात् परमात्मा ओ३म् ही आत्मा के द्वारा जानने योग्य है। उसी को जानकर आत्मा अमृतरस का पान करता है। स्वयं यजुर्वेद (40.16) ईश्वर के स्वरूप की चर्चा इस प्रकार करता है-

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम।
कविर्मनीषिः परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्
व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥

(सः) वह ईश्वर (परिअगात्) सर्वत्र व्यापक है (शुक्रम) जगत् उत्पादक है। (अकायम्) शरीर रहित (अव्रणाम्) शारीरिक विकाररहित (अस्त्रविरम्) नाड़ी और नस के बन्धन से रहित (शुद्ध) पवित्र (अपापविद्धम्) पाप से रहित (कविः) सूक्ष्मदर्शी, (मनीषी) ज्ञानी (परिभूः) सर्वोपरि वर्तमान (स्वयम्भूः) स्वयंसिद्ध (शाश्वतीभ्यः) अनादि (समाभ्यः) प्रजा-जीव के लिए (याथातथ्यतः) ठीक-ठीक अर्थात् कर्मफल का (व्यदधात्) विधान करता है।

इस परिभाषा को देखा जाये तो श्रीकृष्ण जी कहीं भी परमेश्वर नहीं दिखाई देते। ईश्वर सर्वव्यापकहोता है, परन्तु श्रीकृष्ण जी जब इन्द्रप्रस्थ में होते हैं तो द्वारका में नहीं होते और द्वारका में होते हैं तो इन्द्रप्रस्थ में नहीं होते। यहाँ पर कुछ लोग शंका करते हैं कि यदि श्रीकृष्ण जी ईश्वर के अवतार नहीं थे तो उन्होंने द्रौपदी का चीर कैसे बढ़ा दिया था?

सच्चाई यह है कि शुद्ध महाभारत, सभा पर्व, अध्याय 67 श्लोक 34 में इस प्रकार की कोई चर्चा नहीं मिलती कि द्रौपदी की साड़ी खींचकर उसे नग्न करने का प्रयास किया गया था। न ही महाभारत में इस चमत्कार का कोई श्लोक मिलता है।

सच्चाई तो यह है कि जिस समय द्रौपदी को सभा में लाया गया था उस समय श्रीकृष्ण जी वहाँ उपस्थित ही नहीं थे। शुद्ध महाभारत के वनपर्व अध्याय 22 श्लोक 42, 43 में यह स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है कि जब योगेश्वर कृष्ण 'काम्यवन' में पाण्डवों को मिलने के लिए गये तो श्रीकृष्ण जी ने कहा, ''यदि मैं उस समय हस्तिनापुर में होता तो युधिष्ठिर के द्वारा जुआ खेलने का यह अनर्थ कभी न होने देता।''

अतः इन प्रमाणों से यही सिद्ध होता है कि न तो द्रौपदी की साड़ी उतारी गई थी और न ही योगेश्वर कृष्ण को उस समय पता ही था। यदि पता नहीं था तो श्रीकृष्ण जी सर्वज्ञ भी नहीं हो सकते। श्रीकृष्ण जी का जन्म हुआ था, मृत्यु हुई थी तो वे जन्म-मरण से रहित भी नहीं थे। शरीरधारी थे, नस-नाड़ी से रहित नहीं थे। ईश्वर बिना शरीर के इस विशाल सृष्टि को बना सकता है और उसे नियम में चला सकता है। उसे किसी तुच्छ अधर्मी को दण्ड देने के लिए शरीर की आवश्यकता नहीं पड़ती। अत्यन्त दुःख का विषय है कि इस अवतारवाद के भ्रम ने भारत की बहुत हानि की है। इन्हीं कारणों से हम परतन्त्र रहे। शत्रु से युद्ध करने की अपेक्षा ईश्वर के अवतार के प्रकट होने की प्रतीक्षा करते रहे और सोमनाथ का मन्दिर लुटता रहा। गौरी, गजनी, बाबर के द्वारा हजारों मन्दिरों को तोड़ दिया गया, अनेक हिन्दुओं को मौत के घाट उतार दिया गया, अनेक विधर्मी बना दिये गये। असंख्य गौओं को काटा गया। अनेक महिलाओं का शील भंग कर दिया गया। भद्र पुरुषो! अवतार का सीधा सा सरल अर्थ है-नीचे उतरना। जब भगवान् सर्वत्र व्यापक है, चढ़ा हुआ ही नहीं है तो उतरेगा कैसे? वह तो सब स्थानों पर विद्यमान है।

गीता में स्वयं श्रीकृष्ण जी ने अर्जुन को उपदेश करते हुए परमात्मा के अस्तित्व को दर्शाया है। परमात्मा के अस्तित्व को मानने वाला बताइये स्वयं कैसे परमात्मा हो सकता है? कदापि नहीं हो सकता। गीता का अन्तिम श्लोक सारी गीता का निष्कर्ष है। यह श्लोक श्रीकृष्ण जी को ईश्वर का अवतार न मानकर एक महान् पुरुष ही सिद्ध करता है-

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रवा नीतिर्मतिर्मम॥

(गीता 18.78)

इस श्लोक में सञ्जय धृतराष्ट्र को कहता है, ''हे राजन्! जहाँ योगेश्वर श्रीकृष्ण हैं और गाण्डीवधारी अर्जुन है वहीं पर श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है। ऐसा मेरा मत है।'' सञ्जय के कथन अनुसार यह सिद्ध होता है श्रीकृष्ण और अर्जुन साथ-साथ

जिस युद्ध में लड़ेंगे उसमें विजय मिलनी निश्चित है। इसका तात्पर्य यह हुआ है कि श्रीकृष्ण जी और अर्जुन दोनों की महाभरत युद्ध में भागीदारी थी, यह और बात है कि किसी की अधिक और किसी की कम। अर्जुन जहाँ बहुत बलशाली, पराक्रमी व धनुर्विघा में अतिनिपुण क्षत्रिय था तो वहीं श्रीकृष्ण जी एक अति बुद्धिमान्, राजनीतिज्ञ, धैर्यवान, विद्वान् तथा दूरदर्शी क्षत्रिय थे। अर्जुन यदि मानव थे तो श्रीकृष्ण महामानव थे। यदि श्रीकृष्ण ईश्वर के अवतार होते तो सञ्जय यह कहता कि पाण्डवों की ओर जब श्रीकृष्ण स्वयं ईश्वर के अवतार है तब कौरवों की जीत की सम्भावना करना ही व्यर्थ है अर्थात् पाण्डवों की जीत होना निश्चित है? सञ्जय का कथन भी श्रीकृष्ण को अवतार सिद्ध नहीं करता। इससे सिद्ध होता है कि श्रीकृष्ण जी ईश्वर के अवतार नहीं थे।

आर्यसमाज की दृष्टि में श्रीकृष्ण-आर्यसमाज श्रीकृष्ण जी को महर्षि दयानन्द की दृष्टि से देखता है, महर्षि द्वारा वर्णित आप्त पुरुष के रूप में मानता है। पुराणों द्वारा वर्णित श्रीकृष्ण जी का स्वरूप तर्क, प्रमाण, बुद्धि, विवेक, विज्ञान और युक्तियों के आधार पर सत्य नहीं है। आर्यसमाज श्रीकृष्ण जी को ईश्वर का अवतार न मानकर दिव्य गुणों से युक्त महापुरुष के रूप में मानता है। पौराणिक विचारधारा को माननेवाले व्यक्ति कहते हैं कि आर्यसमाजी नास्तिक है, क्योंकि वे श्रीकृष्ण जी को नहीं मानते, परन्तु वास्तविकता यह है कि आर्यसमाज श्रीकृष्ण जी को पुराणपैथियों से अधिक मानता है। हम बड़े गर्व के साथ कह सकते हैं कि आर्यसमाज श्रीकृष्ण जी को जितना जानता और मानता है, उतना संसार का कोई भी आस्तिक नहीं मानता।

आर्यसमाज श्रीकृष्ण जी के महाभारत में वर्णित स्वरूप को मानता है। भागवत पुराण के कृष्ण गोपियों के साथ रासलीला रचाने वाले, माखन चुराने वाले, बांसुरी की धुन से गोपियों को अपनी ओर आकर्षित करने वाले और रसिक प्रवृत्ति के है, परन्तु आर्यसमाज के कृष्ण सर्वगुण सम्पन्न, महान् योगीराज, वेद-वेदांग-स्मृति आदि के ज्ञाता, न्यायशास्त्र व राजनीति में पारंगत, आदर्श राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ, नीतिनिपुण, राष्ट्रनायक, सदाचारी, न्यायकारी, परोपकारी, सद्गृहस्थी, त्यागी, तपस्वी तथा उच्चकोटि के संयमी है।

पुराणपन्थी उनके चित्र की पूजा करके, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन रासलीलायें करके, मन्दिरों में उनसे सम्बन्धित सुन्दर-सुन्दर झाँकियाँ सजाकर, व्रत रखकर अपने कर्त्तव्य की इति श्री समझ लेते हैं, परन्तु आर्यसमाज उनके चित्र की पूजा न करके उनके चरित्र की पूजा करता है। आर्यसमाज उनको एक महापुरुष मानकर उनके जीवन के गुणों को अपनाने की शिक्षा देता है।

जिज्ञासा हो सकती है कि श्रीकृष्ण जी जब ईश्वर का अवतार नहीं थे तो उन्हें आर्यसमाजी लोग भी बार-बार भगवान् कृष्ण क्यों कहते हैं। भगवान् शब्द ईश्वर का भी वाचक है और मनुष्य का भी। किसी विद्वान् ने भगवान् शब्द की व्याख्या करते हुए बताया है।

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसश्श्रियः।
ज्ञानवैराग्ययोश्चैव पण्णां भग इतीरणा॥

सम्पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य इन छह गुणों का नाम 'भग' है। जिसके पास ये गुण होते हैं-वह भगवाला अर्थात् 'भगवान' होता है। अतः श्रीकृष्ण जी को भगवान् सम्बोधित करने में आश्चर्य ही क्या? परमात्मा भी इन भगों से परिपूर्ण होने से भगवान् है और मनुष्य भी भगवान् कहला सकता है। इतना अन्तर यहाँ अवश्य जान लेने योग्य है कि इन भागों से परिपूर्ण होने से भगवान् है और मनुष्य भी भगवान् कहला सकता है। इतना अन्तर यहाँ अवश्य जान लेने योग्य है कि इन भागों के साथ-साथ परमात्मा में आनन्द, सर्वव्यापकता व सर्वज्ञता आदि गुण भी विद्यमान रहते हैं, जिनसे वह सृष्टि की उत्पत्ति, पालन, संहार भी करता है, परन्तु आत्मा में ये गुण नहीं होते। इस कारण कोई भी आत्मा कभी भी परमात्मा नहीं बन सकता।

सारे विश्व में अनेक महापुरुष हुए हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे। सभी महापुरुषों में अपनी-अपनी विशेषताएं थी जिसके कारण उन्हें स्मरण किया जाता है, परन्तु श्रीकृष्ण जी वास्तव में अप्रतिम हैं, अनुपम हैं, उनकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती। उनके चरित्र के मुख्य गुण निम्नलितखत हैं-

1. योगेश्वर श्रीकृष्ण- स्वयं श्रीकृष्ण जी ने अर्जुन को उपदेश देते हुए गीता के दूसरे अध्याय के 48वें श्लोक में योग का अर्थ बताया है-

''**समत्वं योग उच्यते**'' इस उक्ति के अनुसार श्रीकृष्ण जी योगी ही नहीं समदर्शी भी थे।

2. **कर्मकुशलता**-योगीराज श्रीकृष्ण जी गीता 2.50 में कहते हैं-

''**योगः कर्मसु कौशलम्**'' किसी भी कार्य को कुशलतापूर्वक, दत्तचित होकर करना ही योग है। श्रीकृष्ण जी कर्म को ही विशेष समझते थे तभी तो अर्जुन को कहते हैं-कर्म करना तुम्हारा कर्तव्य है, फल की चिन्ता मत करो।

3. **विनम्रता**-युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सभी ने अपने-अपने कार्य बाँट लिये, परन्तु श्रीकृष्ण जी ने देखा कि उन्हें कार्य सौंपे जाने के विषय में सब असमंजस में है तो उन्होंने नम्रतापूर्वक निवेदन किया, ''मुझे सेवा का कार्य सौंपा जाये, मैं सब अतिथियों के चरण धोऊँगा।''

4. **शालीनता और शिष्टता**-श्रीकृष्ण जी महान् राजा होते हुए भी जब भी श्री व्यास जी, धृतराष्ट्र, कुन्ती, युधिष्ठिर, भीष्म पितामह, विदुर आदि से मिलते तो उनके चरण-स्पर्श करना न भूलते थे।

5. **न्यायप्रियः**- चाहे कौरव अत्याधिक शक्तिशाली थे, परन्तु अन्यायकारी कौरवों का साथ न देकर न्याय पर चलने वाले धर्मात्मा पाण्डवों का साथ दिया।

6. **वीर, स्वाभिमानी, निर्भीक**-शान्ति प्रस्ताव प्रस्तुत करने वाले श्रीकृष्ण जी को दुर्योधन अपमानित करने का प्रयास करता है, वे दुर्योधन को फटकारते हुए उसे भोजन के निमन्त्रण को अस्वीकार करते हैं। स्वयं को कैद करने का प्रयास करने पर श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र को ललकारते हैं और अपने वीर, स्वाभिमानी एवं निर्भीक होने का परिचय देते हैं।

7. **निर्लोभी**- कंस का वध किया, परन्तु राज्य अपने नाना उग्रसेन को दे दिया। जरासन्ध का वध करके मगध का राज्य उसके पुत्र सहदेव को दे दिया। महाभारत का युद्ध जीतकर हस्तिनापुर का राज्य युधिष्ठिर को दे दिया। उन्होंने लोभरहित होकर अन्याय-अत्याचार को समाप्त किया।

8. **कुशल नीतिनिपुण**- उन्होंने सज्जनों के साथ शिष्टाचार और दुष्टों के साथ '**शठे शाठ्यम समाचरेत्**' की भावना को न्याय संगत माना।

9. **यज्ञप्रिय**-गीता 3/13 में कहा है-सर्वदा सुख चाहने वाले को सदा श्रेष्ठ कर्मों में संलग्न रहना चाहिए। यज्ञ एक श्रेष्ठतम कर्म है। जो यज्ञ के पश्चात् खाता है (यज्ञशेष) अर्थात् अमृत खाता हुआ सब दुःखो से मुक्त हो जाता है।

10. **ओ३म् ही ईश्वर का मुख्यनाम है ऐसा मानना**- गीता 8/14.-15 में कहा है-इसी मेरे प्यारे इष्ट 'ओ३म्' को जो भक्त नित्य नियम से जपता है, वह बार-बार के जन्म तथा मृत्यु के दुःख से बचकर परमगति (मोक्ष) को प्राप्त करता है।

11. **गृहस्थ होते हुए भी योगी**- श्रीकृष्णा जी साधारण गृहस्थ ही नहीं बल्कि एक आदर्श गृहस्थ हैं। आदर्श गृहस्थ के घर में श्रेष्ठ सन्तान, पत्नी धार्मिक, धन की प्रचुरता, यश की प्राप्ति सभी गुण होते हैं। श्रीकृष्ण जी इन सभी गुणों के सागर थे।

12. **आदर्श मित्र**-मित्रता निभाना कोई भी श्रीकृष्ण जी से सीखे। मित्र चाहे निर्धन ही क्यों न हो। सुदामा के आने पर उसका न केवल स्वागत किया। अपितु उसको धन-धान्य से सम्पन्न कर दिया।

13. **ईश्वरभक्त**- प्रतिदिन दोनों समय बड़ी श्रद्धा और निष्ठा से सन्ध्या किया करते थे। यहाँ तक कि दूत के रूप में जब श्रीकृष्ण जी हस्तिनापुर जा रहे थे तो रास्ते में सायंकाल के समय रथ रोककर सन्ध्या की, यह महाभारत में आता है।

अवतीर्य रथात् तूर्णा कृत्वा शौचं यथाविधि।
रथमोचनमादिश्य सन्ध्यामुपविवेश सः॥

13. **नारी सम्मान की रक्षा प्रथम कर्त्तव्य आदि**- महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सदैव महापुरुषों के निर्मल एवं उज्जवल जीवन-चरित्र को संसार के सामने रखा है। महर्षि का यह गुण हमें विरासत में मिला है। अतः हम श्रीकृष्ण जी के वास्तविक स्वरूप को समझें। जिस प्रकार श्रीकृष्ण जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन सत्य, धर्म और न्याय की स्थापना में व्यतीत कर दिया, उसी प्रकार हम भी अपने चारों ओर फैले हुए अज्ञान, अभाव, अन्याय, अधर्म, आतंकवाद, भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए श्रीकृष्ण जी के गुणों और नीतियों को जीवन में धारण करके वैसा ही आचरण करें, तभी हमारा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाना सार्थक होगा।

4/45, शिवाजी नगर, गुरुग्राम, हरियाणा

विजयदशमी पर्व का सांस्कृतिक महत्व

- डॉ. महेश विद्यालंकार

भारत ऋषि एवं कृषि-प्रधान देश है। पर्व यहाँ की सांस्कृतिक चेतना के आधार रहे हैं। कई पर्व फसलों के साथ जुड़े हैं तो कई पर्व ऋतु-परिवर्तन ऐतिहासिक, घटनाओं और महापुरुषों के जीवनों से जोड़े गए हैं। पर्व जीवन में उत्साह, उल्लास एवं उमंग का संचार करते हैं। इन त्यौहारों से जीवन और समाज में मेलजोल व भाईचारा आता है। हमारा देश त्यौहारों का देश कहलाता है। यहाँ किसी न किसी पर्व का वातावरण हर दिन बना ही रहता है। इन पर्वों में देश की धार्मिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन की झाँकियां मिलती हैं। पर्वों से सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता, संगठन और परस्पर भाईचारे का सन्देश मिलता है।

विजयदशमी पर्व समूचे देश में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। वैदिक काल से ही इस त्यौहार का महत्व आकर्षण व विशेषता रही है। हमारे देश में मुख्य तीन ऋतुएं होती हैं-सर्दी, गर्मी व वर्षा। वर्षा के कारण नदियाँ बाढ़ से उमड़ पड़ती है। चारों ओर पानी नजर आता है। आने-जाने के मार्ग बन्द हो जाते हैं। प्राचीन काल में ऐसा होता था। आजकल तो इतने साधन, सुविधाएं उपलब्ध हैं कि वर्षा ऋतु का सामान्य जीवन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। पहले के समय में इतने उन्नत साधन नहीं होते थे। किसान, व्यापारी और यात्री गाड़ी, रथ, नौका आदि साधनों से अपना आवागमन का कार्य चलाते थे। वर्षा के बन्द होते ही शरद ऋतु के आगमन पर व्यापार-यात्रा, कृषिकर्म सब-कुछ आरम्भ हो जाता था।

वर्षा ऋतु में गाड़ी, रथ व अन्य साधनों में जो जंग व रूकावट आ जाती थी, उन अस्त्र-शस्त्रों और साधनों को साफ व तेज किया जाता था। घोड़ों और हाथियों की साज-सामग्री को साफ व सुन्दर बनाया जाता था। यात्रा और व्यापार के लिए वाहनों व साधनों को साफ-सुथरा बनाकर उपयोग के योग्य किया जाता था। सभी अपने अपने कार्य की तैयारी में लग जाते थे। विजयदशमी के दिन से व्यापार, यात्रा विजय और विदेश-गमन आदि आरम्भ हो जाते थे। लोग व्यापार-यात्रा से पूर्व यज्ञ-अनुष्ठान और पूजा आदि धार्मिक कार्यों को महत्व देते थे। परस्पर मिलकर मन-मुटाव दूर करके एक-दूसरे की सफलता के लिए मंगलकामनाएं करते थे।

विजयदशमी का पर्व क्षत्रियों की विजय का त्यौहार कहलाता है। यह शक्ति-पूजा का पर्व है। शस्त्र-पूजा का विधान शास्त्र-सम्मत रहा है। **''शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्रचर्चा प्रवर्त्तते''**-जिस राष्ट्र में शौर्य, पराक्रम और वीरता की पूजा होती है, उसी राष्ट्र में शास्त्रों एवं धर्म ग्रन्थों का पठन-पाठन निर्विघ्न रूप से चलता है, इस पर्व का वैदिक स्वरूप ऐसा ही मिलता है। कालान्तर में अनेक रूढ़ियाँ, घटनाएँ और किंवदन्तियाँ जुड़ती गई। सत्य व यथार्थ प्रेरक रूप छूटता गया।

वर्तमान में जो इस पर्व का रूप-स्वरूप दिखाई देता है, उसमें अनेक आडम्बर, विकृतियाँ और कल्पनाएँ आदि जुड़ गई हैं, जिससे वास्तविकता का बोध होना कठिन हो गया है। आज आम धारण प्रचलित हैं कि विजयदशमी के अवसर पर श्रीराम द्वारा रावण पर विजय प्राप्त की गयी थी। विद्वानों तथा वाल्मीकी रामायण का इस तिथि पर मतभेद है। श्रीराम द्वारा लंका-विजय भारत का सबसे बड़ा पराक्रम माना जाता है। शायद उनकी विजय-यात्रा इसी दिन आरम्भ हुई हो, इसीलिए हम भारतीयों का यह दिन विजय-मुहूर्त बन गया हो। जो भी रहा हो, किन्तु जो आज लोक-प्रचलन चल रहा है, वह बड़ा प्रबल है। इन दिनों नगरों, ग्रामों और देश-विदेश सर्वत्र रामलीलाओं, देवी-पूजन, धार्मिक अनुष्ठान आदि की धूम मची होती है। कई दिनों तक रामलीला का मंचन होता है। बाल-वृद्ध सभी नर-नारी हर्षोल्लास के साथ सम्मिलित होते हैं। श्रीराम के जीवन-चरित्र और कार्यों का गुण-कीर्तन व मंचन होता है। दशहरे के दिन सभी बड़ी धूमधाम तथा सज-धज के साथ रावण-वध में भाग लेते हैं। ऐसा हर साल होता है।

सवाल यह है कि हमने इस पर्व से जीवन, व्यवहार व संसार के लिए कुछ शिक्षा और प्रेरणा ली है या नहीं? यदि नहीं ली तो यह पर्व मात्र रस्म, रिवाज व परम्परा है, जिसका निर्वाह हो रहा है। यह आज के मानव तथा समाज की दु:खद विडम्बना है कि सभी पर्व, रामलीलाएँ, कृष्णलीलाएं, धार्मिक कर्म, तीर्थ कथा, प्रवचन, यात्राएं आदि मेले और मनोरंजन का रूप लेते जा रहे हैं। लोग खाने, पीने,

घूमने और तमाशा देखने के भाव से इन स्थानों पर जाने लगे हैं। चरित्र-निर्माण, जीवन-सुधार और विचार प्राप्ति का भाव छूटता जा रहा है। कागज का रावण हर साल जला दिया जाता है परन्तु असली रावण सदा जिन्दा बना रहता है तथा हर साल बढ़ता, फलता-फूलता और फैलता जा रहा है। पहले एक रावण था, आज अनेक रावण गली, मोहल्ले और कदम-कदम पर मिल जायेंगे, जो घात लगाए बैठे हैं कि कब सीता मिले और हम उठाकर, चुराकर, भगाकर तथा फुसलाकर ले उड़ें। इस रावणवृत्ति पर जब तक हम राम-वृत्ति द्वारा विजय प्राप्त नहीं करते, तब तक इस पर्व की महत्वपूर्ण सार्थकता सिद्ध नहीं हो सकेगी। श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन आदर्श, कर्त्तव्य, बुद्धि, प्रेम, त्याग और निर्माण की प्रेरणा का सन्देश देता है। इन्हीं भावों से व्यक्ति, परिवार समाज एवं राष्ट्र उन्नत बनते हैं। यही इस पर्व की मूल चेतना है।

विजयदशमी के साथ नवरात्र-व्रत, उपवास, पूजा-पाठ, अनुष्ठान आदि का सम्बन्ध जोड़ा जाता है। इन क्रियाओं का हमारे जीवन और विचारों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जीवन को असद् वृत्ति से सद्वृत्ति की ओर तथा भगवद्-भक्ति की ओर लाने के लिए व्रत, पूजा, सत्संग यज्ञ आदि का महत्वपूर्ण योगदान है। नवरात्रों के माहात्म्य व फल का पुराण शास्त्रों में विस्तार से चिन्तन है। मैं यहाँ पर मात्र शारीरिक आयुर्वेदिक दृष्टि से, जो शरीर को निरोग बनाने में सहायक है, उसकी चर्चा कर रहा हूँ। इस शरीर में आठ चक्र और नौ द्वार हैं। ऋतु-परिवर्तन के अवसर पर शरीर के नौ द्वारों की स्वच्छता व शुद्धि की प्रेरणा भी इस नवरात्र में छिपी है यह तन, मन, की शुद्धि का पर्व है। प्रकृति रूपी दुर्गा मां के साथ जुड़ने का पावन अवसर है। नियम यह है कि जहाँ भी मल रूकता है, वहीं रोग उत्पन्न हो जाते हैं। जब भी ऋतु-परिवर्तन होता है तभी रोग आ घेरते हैं। यदि शरीर के नौ द्वारों को जल, उपवास, फलाहार निराहार आदि से स्वच्छ कर लिया जाए तो आने वाली ऋतु में व्यक्ति निरोग रह सकता है। जब ऋतु बदलती है, तभी नवरात्र आते हैं। आयुर्वेद भी यही कहता है कि खान-पान, दिनचर्या और रहन-सहन के परिवर्तन से आयुपर्यन्त जीवन सुखी रह जा सकता है। इस नवरात्र पर्व का यह वैज्ञानिक, व्यावहारिक व उपयोगी चिन्तन छूट रहा है। मात्र बाह्य-लोकाचार तथा आडम्बरों तक ही दृष्टि सीमित होती होती जा रही है। जो इस पर्व का मूल चिन्तन व संदेश था वह छूट रहा है।

विजयदशमी पर्व के साथ दुर्गा-पूजा का महोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। बंगाल-प्रान्त में दुर्गा-पूजा बड़े भव्य स्तर पर होती है। बड़े-बड़े पण्डालों में दुर्गा की प्रतिमा का दिव्य आकर्षक रूप प्रदर्शित किया जाता है। लोग श्रद्धा-भक्ति और उत्साह के साथ पूजा-अर्चना में भाग लेते हैं। दुर्गा के नौ विशेष कार्यों के कारण अनेक नाम प्रचलित हैं। उन नामों व कार्यों की चर्चा न करके मात्र इस पर्व का जीवन और जगत् के लिए जो प्रेरणा और सन्देश है, उसका संक्षेप में चिन्तन रख रहा हूँ। जब भी इस संसार में अन्याय, अत्याचार और राक्षसी वृत्तियाँ बढ़ने लगती हैं, तब उन राक्षसी वृत्तियों का दमन दैवीय शक्ति से ही होता है। उसी दैवी शक्ति का नाम दुर्गा है। दुर्गा का एक अर्थ बुद्धि भी माना गया है। संसार में बुद्धि के बल की प्रार्थना की गई है। चाणक्य कहते हैं, ''परमात्मा तू मेरा सब-कुछ छीन लेना, बुद्धि मत छीनना। बुद्धि होगी तो मैं संसार में सब-कुछ प्राप्त कर लूंगा। गायत्री मन्त्र की प्रेरणा भी **धियो यो नः प्रयोदयात्** का सन्देश देती है।

आज लोग दुर्व्यसनों, दुर्गुणों और गन्दे आचार-विचार से अच्छी-भली बुद्धि को खराब कर रहे हैं। यदि मानव अपना और संसार का कल्याण चाहता है तो उसे पाप से पुण्य की ओर, असत्य से सत्य की ओर, राक्षसवृत्ति से दैवी वृत्ति की ओर अपने जीवन को लगाना चाहिए। जो आसुरी भावों और कर्मों की ओर बढ़ते हैं, उनका अन्ततः विनाशकारी पतन होता है। जो चराचर में व्याप्त शक्ति पर.आस्था व श्रद्धा रखकर जीवन-यात्रा चलाते हैं, उनके जीवनों में सुख, शन्ति प्रसन्नता व आनन्द की प्राप्ति होती है। यही इस पर्व की संगति और सन्देश है।

संक्षेप में आज का युग वैज्ञानिक, तर्क और प्रमाण का युग है। हमारे जो पर्व, व्रत अनुष्ठान और धार्मिक सामाजिक, रीति-रिवाज हैं उनका व्यावहारिक, उपयोगी विज्ञान-सम्मत, बुद्धि अनुकूल जो उज्जवल पक्ष है, जो जीवन और जगत् के लिए उपयोगी है, उसी का पालन करना चाहिए। जो इन पर्वों के पीछे जीवन-सन्देश दिए गए हैं उनके आचरण से ही हम अपना जीवन और जगत् सुखी शान्त प्रसन्न एवं मंगलमय बना सकते हैं।

-बी.जे. 129, पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सुची

श्रीमती ज्योति झाम्ब धर्मपत्नी श्री आम्बरीश कुमार जी झाम्ब हैरी टेज, सिटी गुरुग्राम हरियाणा	100000/-
हीरो मोटा कॉप लिमिटेड बसंत लोक वसन्त विहार, नई दिल्ली	51000/-
मा. स्वरूप सिंह जी सु. श्री थानेदार हुकम सिंहजी छावला	51000/-
श्री मदन मोहन जी कौशल गुरुग्राम हरियाणा	25000/-
श्री नफे सिंह जी राठी पूर्व विधायक हल्का बहा.	21000/-
श्रीमती प्रेम देवी जी सोनीपत हरियाणा	21000/-
कैप्टन महेन्द्र सिंह जी वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़	14000/-
श्री ओमप्रकाश जी कथूरिया ओ३म् स्वीट्स गुड़गांव	11000/-
श्री जे.के. मेहता ओमैक्स फ्लैट, गुरुग्राम, हरियाणा	11000/-
श्रीमती सरोज जी भल्ला गुरमोहर पार्क नई दिल्ली	11000/-
श्री आनन्द कुमार गुप्ता जी शालीमार बाग, दिल्ली	10000/-
श्री योगेन्द्र वत्स मिश्री देवी ज्ञान निकेतन, श्याम विहार दिल्ली	7000/-
श्रीमती शबनम जून धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र जी जून पूर्व विधायक राजेन्द्र जून, बहा.	6000/-
आर्य केन्द्रीय सभा गुरूग्राम हरियाणा	5101/-
श्रीमती रविकान्ता महाजन धर्मश्री पतंञ्जलि मुनि जी पूर्वी पंजाबी बाग, दिल्ली	5100/-
श्री नेवान सुपुत्र श्री अनिल रेखा बरेजा श्री बाला जी टाईलस गुरुग्राम, हरियाणा	5100/-
श्री मुञ्जाल शोवा लिमिटेड गुरुग्राम, हरियाणा	5100/-
सीमा पवन पाहुजा जी (पार्षद) शिवपुरी गुरुग्राम हरि.	5100/-
श्री संजीव कुमार सु.श्री मा. राम कुमार जी सैक्टर-6,बहा.	5100/-
श्रीमती सावित्री एवं श्री हीरालाल जी चावला, पश्चिम विहार,दि.	5100/-
श्री सतीश कुमार खन्ना जी रोशन आरा रोड, दिल्ली	5100/-
श्री दीपक सुपुत्र श्री सतपाल जी गढ़ी सांपला	5100/-
श्री मा. कर्मवीर जी जसौर खेड़ीवाले, सेक्टर-6,बहा.	5100/-
श्री विजय भाष्कर जी राजपाल पश्चिम विहार, दिल्ली	5000/-
श्री राजकुमारजी आर्य अग्रवाल मुल्तान नगर प.विहार, दि.	5000/-
श्री रूपक जी डाबर जे.के. टावर रिंग रोड, सुरत	5000/-
श्रीमती संतोष जी खुराना कालका जी नई दिल्ली	5000/-
श्री सिद्धान्त दलाल सुपुत्र श्री डॉ. राजवीर सिंह जी दलाल सेक्टर-6, बहादुरगढ़	4000/-
श्री मदन लाल जी रेलन गुरुग्राम हरियाणा	3300/-
श्री सत्यदेव जी ठाकुर भगवान दास नगर नई दिल्ली	3100/-
अनीषा राव सौरभ चौधरी विकासपुरी, दिल्ली	3100/-
श्री राजेश आर्य, पश्चिम विहार, दिल्ली	3100/-
श्री विनय सिंह जी हुड्डा देवनगर, बहादुरगढ़	3100/-
श्री विकास जी बंसल सु. श्री रामदुलारी जी रोहिणी दि.	3100/-
श्री संजीव जी सिक्का न्यू फ्रेण्डस कॉलोनी दिल्ली	3000/-
श्री मा. प्रभुदयाल जी मनहोर नगर, विकासपुरी, दिल्ली	2700/-
श्री कर्नल राजेन्द्र जी सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	2500/-
आर्य समाज मन्दिर पूर्वी पंजाबी बाग, दिल्ली	2100/-
श्रीमती मनीषा मल्होत्रा जी पश्चिम पंजाबी बाग, न.दि.	2100/-
श्री अशोक जी लूथरा भारत पम्पस ए. प्रोजैक्टस गुरु.हरि.	2100/-
श्री अजय कुमार सुनीता रानी, छोकरा आकाश नीम मार्ग, डी.एल.एफ, गुरुग्राम	2100/-
श्री विकास मेहता जी सुपुत्र श्री सोमनाथ जी आर्य प्रताप नगर, गुरुग्राम हरियाणा	2100/-
श्री हंसराज अरोड़ा परिवार पश्चिम विहार दिल्ली	2100/-
श्रीमती संतोष भारद्वाज पत्नी श्री आनन्द प्रकाश जी भारद्वाज पश्चिम विहार दिल्ली	2100/-
श्रीमती शान्ता बत्तरा धर्म श्री बलवीर जी बत्तरा पश्चिम विहार,दि.	2100/-
श्री रविन्द्र कुमार जी गुप्ता पश्चिम पंजाबी बाग, दिल्ली	2100/-
श्रीमती ऐनीसूद कालका जी नई दिल्ली	2100/-
दी पब्लिक केरियर ट्रक यूनियन परनाला रोड, बहादुरगढ़	2100/-
श्रीमती दिव्या गुप्ता पत्नी श्री निखिल गुप्ता अग्रवाल कॉलोनी बहा.	2100/-
ब्रह्मचारी लक्ष्य सु. श्री अशोक जी जून नूना माजरा,बहा.	2100/-
श्री कृष्ण कुमार डरोलिया बहादुरगढ़	2100/-
श्री यशस्कर दिवान सैक्टर-6, बहादुरगढ़	2100/-
श्री प्रकाशवीर आर्य जी झज्जर हरियाणा	2100/-
श्री दीपक कुमार योगनिष्ठ बहादुरगढ़	2100/-
श्री सत्यप्रकाश वशिष्ठ जी बहादुरगढ़	2100/-
श्री रविन्द्र आर्य एवं पवन आर्य सैक्टर-6, बहादुरगढ़	2100/-
श्री धर्मदेव जी खुराना सैक्टर-9, रोहिणी, दिल्ली	2100/-
श्री संचीनी चावला अंधेरी मुम्बई	2100/-
पंकज शालिनी अरोड़ा पंजाबी बाग, दिल्ली	2100/-
श्रीमती राम दुलारी जी बंसल वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़	2000/-
श्री राज सिंह जी जून नूना माजरा झज्जर	2000/-
श्रीमती प्रेमलता देवी जी आर्या पत्नी श्री इन्द्रजित जी छाबड़ा पश्चिम विहार, दिल्ली	1600/-
श्रीमती महीमा देवी जी पश्चिम विहार, दिल्ली	1500/-
श्री राघव जिन्दल जी पूर्वी पंजाबी बाग, दिल्ली	1100/-
मानक टाला परिवार पूर्वी पंजाबी बाग, दिल्ली	1100/-
वृंदा सहपरिवार पूर्वी पंजाबी बाग, दिल्ली	1100/-
नेहा सहपरिवार पूर्वी पंजाबी बाग, दिल्ली	1100/-
श्री अभिमन्यु जी दहिया भगवान दास नगर, पंजाबी बाग, पूर्वी दिल्ली	1100/-
श्री विजेन्द्र जी शौकिन गुरुग्राम हरियाणा	1100/-

श्री यशपाल जी कामरा शिवा जी नगर गुरुग्राम हरियाणा	1100/-
श्री संजय गुप्ता जी ट्रिनीटि टावर डी.एल.एफ. गुरु.हरि.	1100/-
श्रीमती कमलेश चुघ पश्चिम विहार, दिल्ली	1100/-
श्रीमती सत्यवती जी गिरधर पश्चिम विहार दिल्ली	1100/-
श्री विश्वदीप लाम्बा पश्चिम विहार, दिल्ली	1100/-
श्री बुद्धवन्त लाल जी गुलाटी पश्चिम विहार, दिल्ली	1100/-
श्रीमती टीना मल्होत्रा पंजाबी बाग, दिल्ली	1100/-
श्री धर्मपाल जी कुक्रेजा पंजाबी बाग, दिल्ली	1100/-
श्री प्रदीप जी आर्य स्वर्ण अपार्टमेन्ट रोहिणी दिल्ली	1100/-
डॉ. रघुवीर सिंह जी नागपाल झज्जर, हरियाणा	1100/-
श्री डॉ. सुभाष जी नागपाल झज्जर, हरियाणा	1100/-
श्रीमती सुमन अहलावत पश्चिम विहार दिल्ली	1100/-
स्त्री आर्य समाज पश्चिम विहार दिल्ली	1100/-
श्रीमती सुलक्षणा गुप्ता पश्चिम विहार, दिल्ली	1100/-
कुमारी गरीमा देवी, पश्चिम विहार, दिल्ली	1100/-
श्री जगवीर सैनी सैनी आटो मोबाइल बहादुरगढ़	1100/-
श्री दरबारी लाल जी गुलिया सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री रामधन जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री रवि सींगरोहा जी हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी, बहा.	1100/-
श्री राजीव आर्य जी प्रीति विहार दिल्ली	1100/-
श्रीमती संतोष देवी पत्नी श्री नरेश कौशिक MLA,बहा.	1100/-
डॉ. सुल्तान सिंह एक्यप्रेशर विवेकानन्द नगर, बहादुरगढ़	1100/-
श्री राजेश दहिया जी नजफगढ़, दिल्ली	1100/-
श्री देवेन्द्र कुमार मलिक सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
स्व. श्री चौधरी लज्जी राम सिंह नूना माजरा	1100/-
श्री विश्वनाथ जी अग्रवाल अग्रवाल कॉलोनी, बहादुरगढ़	1100/-
श्री प्रधान राजेन्द्र जी सिंह नजफगढ़ दिल्ली	1100/-
श्री मा. तारीफ सिंह जी झाड़ौदा, दिल्ली	1100/-
श्रीमती रूकमेश जी सांगवान सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री विकास रेलन गुड़गांव, हरियाणा	1100/-
आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट गुड़गांव, हरियाणा	1100/-
आर्य समाज उत्तम नगर, दिल्ली	1100/-
आर्य समाज नजफगढ़, दिल्ली	1100/-
श्री सत्यवीर जी आर्य नजफगढ़ दिल्ली	1100/-
श्री धर्मसिंह जी जून गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़	1100/-
प्रधान महेन्द्र सिंह जी आर्य आर्य समाज बेरी	1100/-
श्री सुमित खुराना, कनिष्ठका खुराना, रोहिणी, दिल्ली	1100/-
श्री अमित खुराना, चारू खुराना रोहिणी, दिल्ली	1100/-
श्री कर्मवीर राठी जी, पूर्व चेयरमेन बहादुरगढ़	1100/-
श्री महेन्द्र सिंह मलिक माडल टाऊन बहादुरगढ़	1100/-
श्री अनिल जी केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली	1100/-
श्री युवराज छिल्लर सुपुत्र श्री हवासिंह जी बहादुरगढ़	1100/-
श्री लक्ष्मण जी पाहुजा न्यू कॉलोनी गुरुग्राम हरियाणा	1100/-
श्री सरोज मनचन्दा जी शिवाजी नगर गुड़गांव	1100/-
श्रीमती कौशल्या पाहुजा जी न्यू कॉलोनी गुरुग्राम	1100/-

श्री विनोद कुमार जी नजफगढ़, दिल्ली	1100/-
श्री अजय कुमार सुनीता रानी धीकरा डी.एल.एफ.-2,गुरु.	1100/-
श्री विजय जी सालारपुर माजरा सोनीपत हरियाणा	1100/-
श्री दुष्यन्त गुप्ता जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
मा. ब्रह्मजीत जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती वेदवती आर्या मुरादपुर टेकना रोहतक, हरियाणा	1100/-
श्री बलदेव राज जी जिन्दल पूर्वी पंजाबी बाग दिल्ली	1000/-
कुमार शलिनी जुत्शी कैलाश कॉलोनी, दिल्ली	1000/-
श्री महेन्द्र शर्मा जी, मॉडल टाऊन बहादुरगढ़	1000/-
श्री संदीप आर्य सुपुत्र श्री रणवीर दलाल बहादुरगढ़	1000/-
मलिक परिवार पश्चिम विहार दिल्ली	1000/-
श्री जितेन्द्र चुघ जी दिल्ली	1000/-
श्री तिलकराज जी बहादुरगढ़	1000/-
कुमारी मेघाली सुपुत्री श्री बिजेन्द्र पारासर बहादुरगढ़	1000/-
श्री रामफल सु. श्री उमराव सिंह ओहल्याण गढ़ी सांपला	511/-
मा. करतार सिंह जी टीकरी दिल्ली	505/-
पं. जयभगवान आर्य झज्जर हरियाणा	501/-
श्री ओमपाल जी उर्फ चौधरी धनौरा टीकरी, बागपत	501/-
श्री राजसिंह जी धनौरा टीकरी बागपत	501/-
श्री रामदास जी आर्य धनौरा टीकरी बागपत	501/-
श्रीपाल जी आर्य धनौरा टीकरी बागपत	501/-
श्रीमती लक्ष्मी देवी जी धर्मपत्नी श्री राजवीर जी बहादुरगढ़	501/-
प्रसन्ना एवं अमित् चौधरी कीर्तिनगर, दिल्ली	501/-
श्री वैद्य मान सिंह जी दलाल माण्डोठी	500/-
श्री सक्ष्म गुप्ता जी उत्तमनगर दिल्ली	500/-
श्री गणेश जी गोयल नया बाजार दिल्ली	500/-
श्री राजकर्ण जी आर्य बादली, झज्जर	500/-
श्रीमती कांता शर्मा, झज्जर रोड, बहादुरगढ़	500/-
श्री अभिमन्यु आर्य सुपुत्र श्री राजवीर जी आर्य बहादुरगढ़	500/-
श्री सावित्री जी गोयल सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री जगदीश ठाकुर पश्चिम विहार दिल्ली	500/-
श्री दलवीर सिंह जी सैक्टर-2, बहादुरगढ़	500/-
आंचल गरूड़ जी पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्रीमती मायावती मदान जी (सतीश) धर्मपुरा बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती फुलकुमारी जी धर्मपुरा बहादुरगढ़	500/-
श्री राधेश्याम जी आर्य सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती ओमवती दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	500/-
श्री सत्यपाल जी दलाल सु. श्री महेन्द्र सिंह जी बहा.	500/-
श्री शीलचन्द जी बहादुरगढ़	500/-
श्री अवधेश कुमार जी बहादुरगढ़	500/-
श्री सुखदेव जी महावीर मन्दिर बहादुरगढ़	500/-
श्री लक्ष्मी नारायण महेश्वरी जी मॉडल टाऊन, बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती पूनम जी (राजीव मेहता जी) पश्चिम विहार,दि.	500/-
श्री भीम सिंह डागर जी निलोठी बहादुरगढ़	500/-
श्री कृष्ण गोपाल जी विकासपुरी, दिल्ली	500/-

श्री जयपाल जी दहिया सेवा निवृत प्रधानाचार्य बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती सुनीता छिकारा, बहादुरगढ़	500/-
श्री सत्यवीर सिंह राठी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती प्यारी देवी जी नजफगढ़, दिल्ली	500/-
श्री राजेश राठी जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
आर्य समाज झज्जर रोड, बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती राजदेवी जी दहिया विवेकानन्द नगर, बहादुरगढ़	500/-
श्री संजय जी जैन पूर्वी पंजाबी बाग, दिल्ली	500/-
श्री राजकुमार जी आनन्द कीर्तिनगर, दिल्ली	500/-
श्री जगदीश चन्द जी गिरधर पश्चिम विहार दिल्ली	500/-
प्रियंका गुलाटी पंजाबी बाग, दिल्ली	500/-
श्री सुरेन्द्र सिंह जी धनखड़ झज्जर, हरियाणा	500/-
श्रीमती उषा रानी, पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्री रविन्द्र जी गुप्ता ऑटो मार्किट बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती बृजवाला जी आर्या (रिटायर्ड अध्यापिका) यमुनानगर,हरि.	500/-
श्री सतीश संदूजा जी धर्मपुरा बहादुरगढ़	500/-
श्री जसविद्रं नांदल सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री मनुदेव जी आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़	500/-
श्री रचित सुपुत्र श्री राजदीप जी एडवोकेट माडल टाऊन बहादुरगढ़	500/-
श्री मा. धूप सिंह जी बादली झज्जर	500/-
श्री विवेक गुप्ता जी पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्री मा. हरी सिंह जी दहिया बहादुरगढ़	500/-
श्री तास्बिक सुपुत्र श्री राकेश जी जांगड़ा नेहरू पार्क,बहा.	500/-

गौशाला हेतु दान

श्री मनीष सुपुत्र श्री प्रदीप जी घेवरा दिल्ली	41000/-
श्रीमती पूनम मेहता जी पश्चिम विहार दिल्ली	11000/-
कु. शाम्भवी सुपुत्र श्री आशीष जी श्रीमती शिक्षा द्वारका दिल्ली	11000/-
श्री शांति देवी कर्ण सिंह जी गांव परनाला बहादुरगढ़	2111/-
श्री सत्य प्रकाश वशिष्ठ जी शक्ति नगर, बहादुरगढ़	2100/-
श्री विकास मैहता प्रताप नगर, गुरुग्राम	1100/-
महिला पार्क समिति गुरुग्राम, हरियाणा	1100/-
श्री योगेन्द्र वत्स जी मिश्री देवी ज्ञान निकेतन दिल्ली	1100/-
मलिक परिवार पश्चिम विहार, नई दिल्ली	1000/-
श्री अनिल कुब्बा सैक्टर-48, गुरुग्राम हरियाणा	500/-
श्री महेन्द्र प्रसाद जी आर्य शिवाजी नगर गुड़गांव, हरियाणा	500/-
बरेजा परिवार गुरुग्राम हरियाणा	500/-

विविध वस्तुएं

ला रमेश्वर दास जी नांगलोई दिल्ली	50 किलो चावल
श्री भीमेश्वरी देवी मन्दिर आश्रम ट्रस्ट बेरी झज्जर	6 टीन घी
श्री बाल किशन जी निजामपुर दिल्ली	40 किलो गेहूं
श्री अशोक कुमार जी शास्त्री मार्किट आजादपुर, दिल्ली	50 किलो चावल
श्री गौरव जी दिल्ली	2 टीन घी
श्रीमती कांता शर्मा झज्जर, रोड, बहादुरगढ़	500/- रूपये, 5 किलो चावल, 1 किलो चीनी
श्री श्री ओम जी अहलावत आर्य नगर, बहादुरगढ़	1 टीन देशी घी
पुरी ऑयल मील बहादुरगढ़	1 टीन रिफाईन्ड तेल
श्री दीपेन्द्र जी डबास शनि मन्दिर टीकरी कलां, दिल्ली	1 टीन सरसो तेल
श्री शशिकांत जी शर्मा बहादुरगढ़	50 किलो आटा 10 किलो आलु
श्री सत्यपाल जी वत्स आर्य काठमण्डी, बहादुरगढ़	एक माईक उत्तम क्वालिटि का
श्री केशव देव जी आर्य लाजपत राय सामग्री स्टोर कुतुब रोड, दिल्ली	यज्ञार्थ 1 बोरी सामग्री
श्री रतन लाल जी सिंघला मण्डी सांपला	भिन्न सामान आया

विशिष्ट भोजन एक समय का देने वाले

श्री सोनू जून गुरुनाक कॉलोनी, बहादुरगढ़	2 समय का
श्री रवि कुमार जी आर्य अञ्जनी प्रोपर्टीज सैक्टर-6,बहादुरगढ़	1 समय का
श्री राजेन्द्र सिंह जी जून सुपुत्र श्री दलेल सिंह जी जून नूना माजरा झज्जर हरियाणा	1 समय का
श्री सतीश सन्दुजा जी धर्मपुरा, बहादुरगढ़	1 समय का
श्री देवी ऋषि जी, नजफगढ़, दिल्ली	1 समय का
श्रीमती वेदवती आर्या मुरादपुर टेकना, रोहतक	1 समय का
श्री जगदीश ठाकुर, दिल्ली	1 समय का

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं-

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 **द्वारा मयंक प्रिन्टर्स,** 2199/64, **नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली**-110005, **दूरभाष**-41548503, **चलभाष**-9810580474 **से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से** 15 **अक्टूबर** 2018 **को प्रकाशित एवं प्रसारित।**

52वें वार्षिकोत्सव की चित्रमय झलकियां

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक

अक्टूबर 2018

छपी पुस्तक – पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2018-20

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में –

52वें वार्षिकोत्सव की चित्रमय झलकियां